नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, रत्नागिरी.

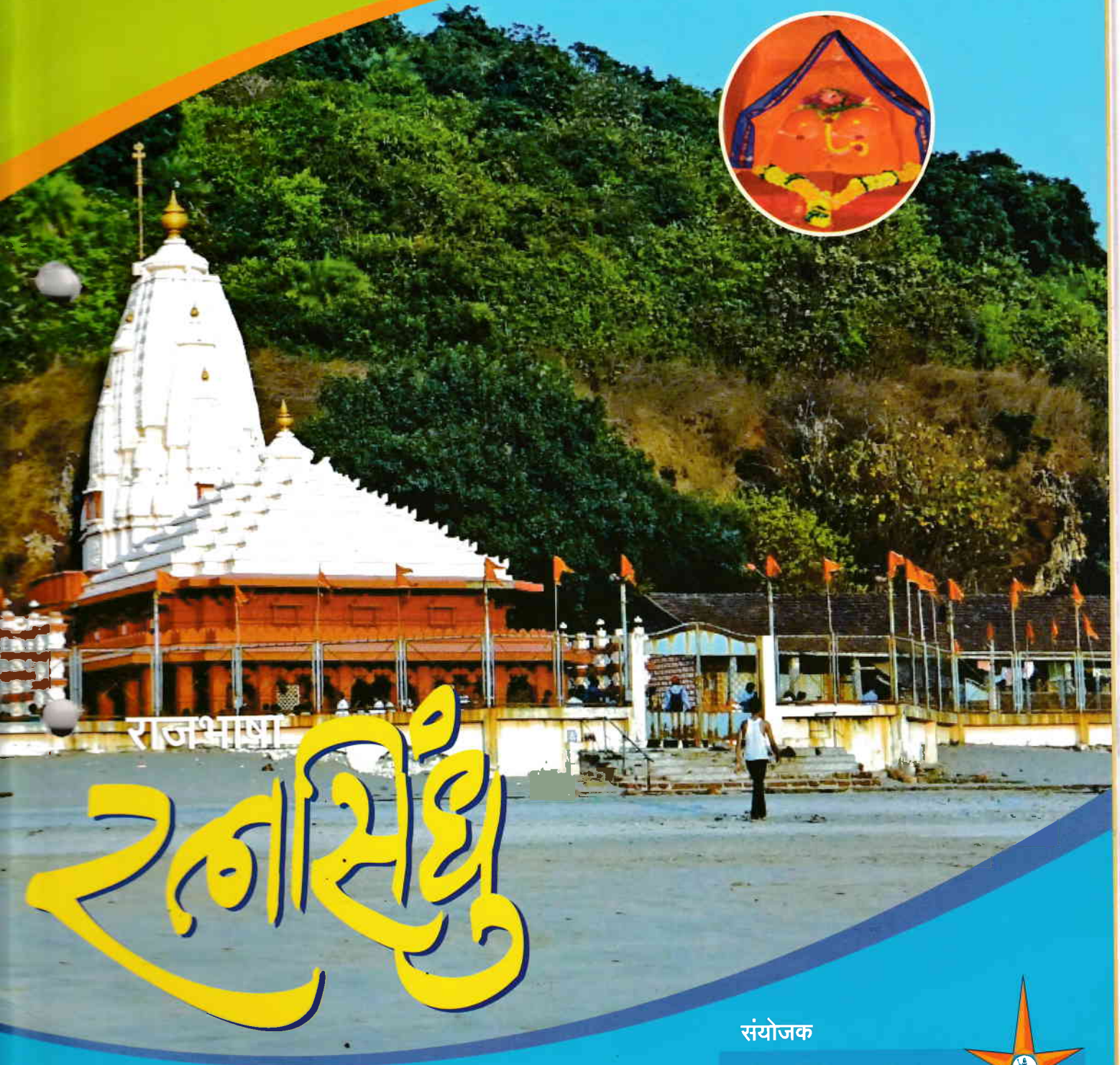

राजभाषा

रत्नसिंधु

संयोजक

बैंक ऑफ़ इंडिया

रिश्तों की जमापूँजी

रत्नागिरी अंचल

- हिंदी छमाही पत्रिका
- **अंक :** पाँचवा

वाह ! बच्चों...

स्नेहांकित राजेंद्र डोंगरे
बी.ई.पदवी 67.93%
पुत्र श्री राजेंद्र डोंगरे
बी.एस.एन.एल. रत्नागिरी

सिध्देश विजय तुरळकर
एच.एस.सी. 94.80%
पुत्र श्री विजय तुरळकर
कोंकण रेल्वेरत्नागिरी

तेजश्री संदिप कांबळे
एच.एस.सी. 93.80%
पुत्री संदिप कांबळे
कोंकण रेल्वे रत्नागिरी

प्रिंशा दीपक राणे
एच.एस.सी. 91.20%
पुत्री श्री दीपक तुकाराम राणे
कोंकण रेल्वे रत्नागिरी

तेजल दीपक राणे
एच.एस.सी. 91%
पुत्री श्री दीपक राणे
कोंकण रेल्वे रत्नागिरी

स्वाती विठ्ठल हाके
एच.एस.सी. 90.40%
पुत्री श्री विठ्ठल हाके
कोंकण रेल्वे रत्नागिरी

सिध्दी शिवराम पेडणेकर
एच.एस.सी. 84%
पुत्री श्री शिवराम पेडणेकर
कोंकण रेल्वे रत्नागिरी

रविश नाथा ढगे
एच.एस.सी. 82.80%
पुत्र श्री नाथा ढगे
कोंकण रेल्वे रत्नागिरी

निकिता अतुल भोकरे
एच.एस.सी. 72.31%
पुत्री श्री अतुल भोकरे
बी.एस.एन.एल. रत्नागिरी

देवेश बाबुराव राऊळ
एच.एस.सी. 68%
पुत्र श्री बाबुराव राऊळ
कोंकण रेल्वे रत्नागिरी

गौरव गिरीश खानोलकर
एस.एस.सी. 91 %
पुत्र श्री गिरीश खानोलकर
बी.एस.एन.एल. रत्नागिरी

सिध्दी राजेंद्र तनजे,
एस.एस.सी. 82.20%
पुत्री श्री राजेंद्र तनजे
कोंकण रेल्वे रत्नागिरी

अध्यक्ष महोदय के कलम से...

प्रिय साथियों,

हमारे नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सभी सदस्यों को मेरा सस्नेह नमस्कार,

समिति की हिंदी पत्रिका राजभाषा रत्नसिंधु का पांचवा अंक आपको प्रस्तुत करते हुए मुझे गर्व महसूस हो रहा है । समिति द्वारा इस अंक में विविधता लाई गई है । आपको विदित है कि राजभाषा नियम के अनुसार महाराष्ट्र को क्षेत्र 'ख' में रखा गया है और इस क्षेत्र की भाषा मराठी है । किसी भी भाषा की समृद्धी, उसकी लवचिकता और स्वीकार्यता पर निर्भर होती है और यह सभी विशेषताएं राजभाषा हिंदी में विद्यमान है । इसी कारण हिंदी भाषा भारत के सबसे बड़े भूभाग पर बोली एवं समझी जाती है । आज, हिंदी की वर्तमान स्थिति राजभाषा, राष्ट्रभाषा एवं संपर्क भाषा के रुप में हमारे सम्मुख है । यह पाया गया है कि बाजार में कोई भी नई तकनीक का आविष्कार हिंदी के साथ-साथ क्षेत्रीय भाषाओं में भी हो रहा है ।

वित्तीय सेवाएं विभाग ने इसी बात को ध्यान में रखते हुए मॉडल 2 को लागू किया और जनता की भाषा को अपने कारोबार से जोड़ दिया है । आज समय की मांग है कि जिस क्षेत्र में हमारा कार्यालय स्थित है, वहां की भाषा को कार्यालयीन कामकाज में अपनाकर अपने कारोबार में वृद्धि करें ।

हमने रत्नसिंधु के इस अंक से मराठी भाषा के आलेख, काव्य आदि के लिए अलग एवं विशेष स्थान दिया है । मुझे लगता है, इस नए प्रयोग को सभी पाठकगण स्वीकार करेंगे ।

इस वर्ष से सदस्य कार्यालयों के राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन पर समिति द्वारा नगर राजभाषा शील्ड प्रतियोगिता का आयोजन किया गया है । यह प्रसन्नता की बात है कि समिति को हमारे क्षेत्र में अग्रसर करने हेतु सदस्य कार्यालयों द्वारा विविध गतिविधियों का आयोजन प्रारंभ किया गया है । सदस्य कार्यालयों से मेरा अनुरोध है कि वे कोर कमेटी द्वारा कार्यान्वित राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग से संबंधित गतविधियों में सहयोग प्रदान करें ताकि हमारी समिति राजभाषा हिंदी के शिखर पर विराजमान हो सकें ।

नूतन वर्ष आप सभी को आरोग्यमय तथा सुखमय रहे यह मेरी और से हार्दिक शुभकामनाएं ।

(वि. वि. बुचे)
अध्यक्ष
नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, रत्नागिरी.

संपादकीय...

प्रिय साथियों,

आप सभी के समक्ष राजभाषा रत्नसिंधु का पांचवा अंक सौंपते हुए प्रसन्नता हो रही है । आप सभी सदस्य कार्यालयों के सहयोग से एवं समिति के अध्यक्ष महोदय जी के दिशा-निर्देशों के अनुसार नवोन्मेषी कार्यक्रमों को अपनाया जा रहा है । समिति द्वारा उप निदेशक महोदय श्री. विनोद कुमार शर्मा के मार्गदर्शन में जो भी निर्णय लिए गए, उसे कार्यान्वित किए गए हैं और इसमें कोर कमेटी का योगदान महत्वपूर्ण रहा है ।

आधुनिकतम तकनीक का प्रयोग करते हुए रत्नसिंधु के तृतीय अंक का प्रकाशन ई-पत्रिका के रुप में किया गया था. लेकिन इस ई-पत्रिका का समुचित प्रचार-प्रसार नहीं हो सका । अत: समिति द्वारा चतुर्थ अंक का प्रकाशन मुद्रित प्रतियों में किया गया । इस पांचवे अंक में विविधता एवं नवीनता को स्थान दिया गया है । क्षेत्रीय भाषा के महत्व को ध्यान में रखते हुए मराठी को भी इस पत्रिका में सम्मानपूर्वक स्थान दिया गया है ।

इस अंक में आलेखकारों एवं रचनाकारों ने अपना अच्छा योगदान दिया है । हमें विश्वास है कि यह अंक आपको जरुर पसंद आएगा । सदस्य कार्यालय के स्टाफ सदस्यों के बच्चों ने शिक्षा के क्षेत्र में अच्छी गुणवत्ता प्राप्त की है । उनके लिए 'वाह बच्चों', साथ ही सदस्य कार्यालयों में इस वर्ष से कार्यालय प्रमुख की हैसियत से कार्यभार ग्रहण करने के पश्चात उनके लिए स्वागत का नया स्तंभ का प्रारंभ किया गया है ।

हमारी समिति की गतिविधियों को निरंतर रखने के लिए विविध प्रतियोगिता का आयोजन अलग-अलग सदस्य कार्यालयों द्वारा किया जा रहा है, नगर में नए कार्यालय खुल रहे है और उनको सदस्य बनाने की प्रक्रिया जारी है । समिति अपना कार्य सफलतापूर्वक कर रही है और उसमें आप सभी सदस्य कार्यालयों का बड़ा योगदान रहा है । संपादक तथा सचिव के हैसियत से मैं आपका बहुत आभारी हूं और भविष्य में भी आपसे सहयोग की अपेक्षा रखता हूं ।

नव वर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं ।

(रमेश गायकवाड)
सदस्य सचिव,
नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति,रत्नागिरी.

राजभाषा
रत्नसिंधु

* अध्यक्ष *
वि. वि. बुचे
अध्यक्ष एवं उप महाप्रबंधक,
बैंक ऑफ इंडिया

* संपादक *
रमेश गायकवाड
सदस्य सचिव
एवं वरिष्ठ प्रबंधक राजभाषा,
बैंक ऑफ़ इंडिया

* कोर कमेटी सदस्य *
पुरुषोत्तम डोंगरे
आकाशवाणी
जनार्दन शिंदे
कोंकण रेल्वे
गजानन करमरकर
डाक कार्यालय
लक्ष्मीकांत भाटकर
सीमा शुल्क
सतीश रानडे
न्यू इंडिया एश्योरन्स कंपनी

संपर्क कार्यालय
अध्यक्ष
नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति,
बैंक ऑफ इंडिया, आंचलिक कार्यालय,
शिवाजी नगर, रत्नागिरी, महाराष्ट्र - 415 639

प्रकाशित सामग्री में व्यक्त विचार रचनाकारों के स्वयं के है । अत: यह आवश्यक नहीं कि इनसे सम्पादक मण्डल सहमत हो ।

अंतरंग

1	आपकी राय	1
2	देश को जोड़नेवाली भाषा हिन्दी	3
3	मानसिक तनाव-हमारा सबसे बड़ा दुश्मन	6
4	हिंदी कविता	8
5	कम्प्युटर का नाता जुड़ा हिन्दी से	9
6	भारत देश का परमाणु उर्जा कार्यक्रम	10
7	सूचना प्रौद्योगिकी एवं हिन्दी भाषा	13
8	अमीर खुसरो : हिन्दी और हिंदुस्तान का गौरव	15
9	क्रोध का प्रबंधन : उन्नति और खुशहाली का मंत्र	17
10	क्या सत्य निष्ठा सदैव फलीभूत होती है ?	18
11	राजभाषा नीति के कार्यान्वयन हेतु 2014-15 के लिए महत्वपूर्ण निर्धारित लक्ष्य	19
12	राजभाषा मॉडल - 2	20
13	नाते तुझे नी माझे	23
14	मराठी कविता	26
15	विशेष क्षमता असलेला चित्रकार : अनिकेत चिपळूणकर	27
16	बैंक ग्राहक सावधानियां	29
17	नगर राजभाषा समिति के तत्वाधान में विविध प्रतियोगिता का आयोजन	30
18	नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, रत्नागिरी - सदस्य कार्यालय	31

आपकी राय

प्रधान मुख्य आयकर आयुक्त, पूर्वोत्तर क्षेत्र का कार्यालय

महोदय,

आपके द्वारा प्रेषित गृह पत्रिका राजभाषा 'रत्नसिंधु' चतुर्थ अंक की एक प्रति प्राप्त हुई, धन्यवाद !

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं को पढ़कर बहुत अच्छा लगा, जो रोचक, प्रेरणादायक और ज्ञानवर्धक है । जो मन को बरबस उद्वेलित कर देतीं है । आशा है यह पत्रिका बैंकों में राजभाषा का उत्तरोतर विकास में अहं भूमिका अदा करती रहेगी - इसी शुभकामना के साथ संपादक मंडल और सभी रचनाकारों को अपनी प्रखर लेखनी के लिए साधुवाद ।

भवदीय,

(रामलाल शर्मा)

कृते सहायक निदेशक (रा.भा.)

मुख्य आयकर आयुक्त (सं.नि.प्रा.) कार्यालय, गुवाहाटी

मुख्य आयकर आयुक्त कार्यालय, भुवनेश्वर

महोदय,

दि. 03-04-14 के आपके पत्र सं. नराकास/रहगा/07-360 के साथ आपकी पत्रिका 'रत्नसिंधु' का चौथा अंक प्राप्त हुआ । राजभाषा नीति से लेकर सामाजिक सरोकार के विषयों तक का फलक इसे समृद्ध करता है । साथ ही पठनीयता के लिहाज से यह चयन इसके पीछे की दूरदृष्टि का भी परिचायक है ।

पत्रिका की निरंतरता की शुभकामना के साथ ।

भवदीय,

(एल. एम. माझी)

आयकर उपायुक्त (मुख्या.) (प्रशा.)

कृते प्रधान मुख्य आयकर आयुक्त, भुवनेश्वर

प्रतिभूति कागज कारखाना, होशंगाबाद

महोदय,

आपके पत्र क्र. नराकास/रहगा/07-360 दि. 03-04-14 अंतर्गत आपके कार्यालय की पत्रिका 'राजभाषा रत्नसिंधु' का चौथा अंक अप्रैल 2014 प्राप्त हुआ । पत्रिका में प्रकाशित सभी लेख सूचनापरक, ज्ञानवर्धक एवं सराहनीय हैं । राजभाषा एवं अनेक सामान्य ज्ञान संबंधी लेख अत्यंत प्रेरणादायक है । कलेवर और सामग्री संकलन प्रशंसनीय है । लेखों में 'मेरा भारत महान' रोचक एवं पठनीय है ।

पत्रिका के सफल संपादन के लिये आपको बहुत बधाई ।

भवदीय,

(वेंकटेश कुमार)

प्रबंधक (उत्पादन)

एवं राजभाषा अधिकारी

मुख्य आयकर आयुक्त कार्यालय. चण्डीगढ़

महोदय,

आपकी पत्रिका राजभाषा 'रत्नसिंधु' की प्रति प्राप्त हुई, धन्यवाद !

नराकास के विभिन्न कार्यक्रमों की जानकारी व विस्तृत विवरण प्रस्तुत करती पत्रिका ज्ञानवर्धन व रोचक है । समिति की विभिन्न गतिविधियों का विवरण व छायाचित्रों के समावेश से पत्रिका की शोभा में वृद्धि हुई है ।

आशा है कि आपकी यह पत्रिका समिति के सदस्य कार्यालयों के कर्मचारियों और अधिकारियों में हिंदी के प्रचार प्रसार में और अधिक सहायक होगी और उन्हें अभिव्यक्ति सार्थक मंच उपलब्ध करवाती रहेगी । पत्रिका के सफल संपादन एवं प्रकाशन से जुड़े सभी सदस्यों को साधुवाद ।

पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए

हार्दिक शुभकामनाएँ.

भवदीय,

(डॉ. सुरेन्द्र कुमार शर्मा)

सहायक निदेशक (राजभाषा) एवं

सचिव, नराकास, चण्डीगढ़

महानदी कोलफील्डस् लिमिटेड

महोदय,

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, रत्नागिरी द्वारा प्रकाशित हिंदी पत्रिका राजभाषा 'रत्नसिंधु' के चतुर्थ अंक की प्रति हमें प्राप्त हुई । धन्यवाद ! पत्रिका का आवरण पृष्ठ तो आकर्षक है ही इसके साथ साथ पत्रिका में समाहित की गई पाठ्य सामग्रियाँ भी बड़े रोचक, सूचनापरक एवं ज्ञानवर्धक है ।

रत्नागिरी, महाराष्ट्र 'ख-क्षेत्र' में आता है फिर भी बहाँ के नराकास संगठन द्वारा पूर्णरुपेण हिंदी कि पत्रिका का प्रकाशन करना सचमुच एक उल्लेखनीय एवं सराहनीय प्रयास है । पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े सभी महानुभावों को मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ ।

भवदीय,

(एन. के. ओझा)

उप महाप्रबंधक (का.औसं./प्रबं.प्रशि.सं./रा.भा.)

आपकी राय

भारत संचार निगम लि., नाशिक

महोदय,

आपके कार्यालय के पत्र सं. नराकास/रहगा/07-360 दि. 03-04-14 के अंतर्गत प्रेषित हिन्दी गृहपत्रिका ' रत्नसिंधु' का अंक प्राप्त हुआ ।

पत्रिका में प्रकाशित लेख रोचक, ज्ञानवर्धक एवं प्रेरक हैं । यह पत्रिका राजभाषा की जानकारी के साथ-साथ अन्य विषयों को भी अपने आपमें समेटे हुए है । गृहपत्रिका न केवल कार्यालय की गतिविधियों को सबके सम्मुख ाती है, बल्कि हमारे कर्मियों के भीतर छिपी प्रतिभाओं को भी मुखर करती है । इस तथ्य के मद्देनजर पत्रिका खरी उतरती है । एक उत्कृष्ट अंक के सफल प्रकाशन हेतु हार्दिक बधाई स्वीकार करें । आगामी अंक और भी आकर्षक और सुरुचीपूर्ण हो, इसकी मंगलकामना करते है ।

शुभकामनाओंसहित

भवदीय,

सदस्य सचिव, न.रा.का.स. एवं राजभाषा अधिकारी,
महाप्रबंधक, बीएसएनएल कार्यालय, नाशिक

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, भिलाई-दुर्ग (छत्तीसगढ़)

महोदय,

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, रत्नागिरी द्वारा प्रकाशित हिंदी गृह पत्रिका 'राजभाषा रत्नसिंधु' के चतुर्थ अंक की नवीनतम प्रति प्राप्त हुई, एतदर्थ धन्यवाद ! पत्रिका में प्रकाशित सामग्री खासकर 'आदिवासी समाज तथा हिंदी साहित्य' एवं 'नेल्सन मंडेला' तथा 'ग्राहकों को सतर्क रहने की जरुरत' पर लेख, पाठकों के लिए काफी रोचक ज्ञानवर्धक एवं उपयोगी है ।

शुभकामनाओं सहित, सादर

भवदीय,

(डॉ. बी. एम. तिवारी)
वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा) एवं
सहसचिव, नराकास भिलाई-दुर्ग (छ.ग.)

भारत सरकार आयकर विभाग, अमृतसर

महोदय,

आपके पत्र संख्या नराकास/रहगा/07-360 दि. 03-04-14 के साथ आयकर विभाग की गृहपत्रिका आयकर 'रत्नसिंधु' का नया अंक मुख्य आयकर आयुक्त महोदय को प्राप्त हो गया है ।

पत्रिका का मुख्य पृष्ठ अत्यंत आकर्षक है । पत्रिका में संकलित रचनाएं ज्ञानवर्धक व मनोरंजक है । मुद्रण हेतु सामग्री का चयन बड़े मनोयोग से किया गया है ।

आशा है कि भविष्य में भी आपकी ओर से इसी प्रकार सहयोग प्राप्त होता रहेगा ।

भवदीय,

(नोनिया धालीवाल)
सहायक निदेशक, राजभाषा व
सचिव, नगर राजभाषा कार्या. समिति, अमृतसर ।

भारतीय लेखा तथा लेखा परीक्षा विभाग, राजस्थान

महोदय,

आपके कार्यालय की हिन्दी पत्रिका राजभाषा 'रत्नसिंधु' के चुतर्थ अंक की प्रति प्राप्त हुई, धन्यवाद । इस पत्रिका में संग्रहित सभी रचनायें प्रभावशाली रोचक एवं उच्चकोटि की हैं । पत्रिका के माध्यम से राजभाषा हिंदी के सृजनात्मक उत्थान हेतु आपके द्वारा किया गया प्रयास सराहनीय है ।

पत्रिका में सम्मिलित की गयी श्री. रवि दिवाकर गिरहे का लेख 'ग्लोबल वार्मिंग से सावधान', श्री. अम्ब्रीष तिवारी की रचना 'मानवता', डॉ. चित्रा मिलिंद का लेख 'आदिवासी समाज तथा हिंदी साहित्य', श्री. नितीन पलंगे की रचना 'दोस्ती' एवं श्री. पी. जी. डोंगरे की कविता 'जीवन' बहुत ही प्रशंसनीय है ।

पत्रिका के सफल सम्पादन हेतु सम्पादक मण्डल को बधाई व पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएं ।

भवदीय,

(हरीश चंद्र माखीजा)
हिन्दी अधिकारी / राजभाषा कक्ष

पारादीप पत्तन न्यास, ओडीसा (भारत)

महोदय,

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, रत्नागिरी द्वारा प्रकाशित राजभाषा पत्रिका 'राजभाषा रत्नसिंधु' का चतुर्थ अंक हमें सधन्यवाद प्राप्त हुई । पत्रिका का कलेवर बहुत अच्छा है और इसमें प्रकाशित सभी सामग्रियां ज्ञानवर्धक है । पत्रिका के संपादन मंडली को परादीप पत्तन न्यास तथा नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, पारादीप की ओर से अनेक शुभकामनाएं और आशा है कि राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में आपका यह प्रयास और निखर हो उठेगा ।

भवदीय,

हिन्दी अधिकारी, पारादीप पत्तन न्यास

देश को जोड़नेवाली भाषा हिन्दी

डॉ. चित्रा मिलिंद गोस्वामी
रत्नागिरी ।

स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान एक ही लक्ष्य था - देश को गुलामी की जंजीरों से मुक्त करना । आंदोलन में विभिन्न प्रांतों के बड़े-बड़े नेता हिन्दी का प्रयोग करते थे । नेताओं ने सम्पर्क भाषा के रुप में हिन्दी भाषा को अपनाया और इस भाषा के माध्यम से स्वतंत्रता आंदोलन को गति दी । नेताओं ने अंग्रेजी से प्रेम करते हुए भी अपनी बात को कोने-कोने तक पहुँचाने के लिए हिन्दी का उपयोग किया । उस समय के भाषण और देश-भक्ति के गीत हिन्दी में होते थे ।

देश आजाद हुआ । स्वतंत्र सेनानी विधान सभाओं में पहुँचे, संसद में पहुँचे । जब तक उनमें स्वतंत्रता आंदोलन का जोश था, उनकी भाषा हिन्दी रही । समय के साथ आन्दोलन का ज्वर धीमा पड़ा, जोश में ठण्डापन आ गया, स्व की परिधि कम होती गयी । अब देश से ज्यादा महत्वपूर्ण हो गयी कुर्सी, जिसपर बैठकर शासन करना था । इनके लिए भाषा, संस्कृति, लोक आदि शब्द बेमानी होते गये । इन जन नायकों में कुछ कर्तव्यपरायण, निष्ठावान अपरग्रही लोग थे । इनकी आवाज धीमी हो गयी ।

देश का जो परिदृश्य हमारे सामने है, वह भयावह है । राष्ट्रीयता, स्वाभिमान, स्वावलम्बन आदि शब्द, शब्दकोशें की शोभा बढ़ा रहे हैं । लोग क्षुद्र स्वार्थों के लिए संकीर्णता के शिकर हो गये । इसी का शिकार बनी हमारी सरल, सुगम, सहज, राजभाषा हिन्दी । अंग्रेजीने हिन्दी को गुलाम बनाकर जख्म पर नमक छिडका। आज जनता और शासकों के बीच संवादहीनता का कारण है भाषा । अंग्रेजी से देश टूट गया है ।

हिन्दुस्तान में राष्ट्रभाषा में वार्तालाप होना जरुरी है । देश में बैठे हुए कुछ अंग्रेजी के दास विदेशी भाषा को देश की राजभाषा बनाना चाहते हैं । शासकीय सौदागरों को अंग्रेजी से दूर करना जरुरी है ।

सवा अरब जनता के इस महान देश में लगभग एक अरब जनता अच्छी तरीके से हिन्दी बोल और लिख सकती है । थोड़े से अंग्रेजी के गुलाम से देश को आजाद करके हिन्दी से देश को जोड़ना चाहिए ।

आज हमें नाज है, हमारे पंतप्रधान मा. मोदी जी ने हिन्दी की प्रतिष्ठा बढ़ायी है । चुनाव के समय भी उन्होंने हिन्दी का उपयोग किया जो सबसे प्रिय रहा । उनके साथ मंत्रिमंडल में शामिल नेता भी हिन्दी को मान्यता देते हैं । इंटरनेट, मोबाईलद्वारा हिन्दी की अहमियत बढ़ायी जा रही है। तथा विदेशों में जाने पर या विदेशी नेताओं के साथ सभाओं में हिन्दी का प्रयोग ही अहम् रहता है । हिन्दुस्तान को पूर्ण स्वतंत्रता तथा एक बनाने के लिए केवल हिन्दी का[illegible] सकती है । हिन्दी सम्पर्क भाषा, राजभाषा, राष्ट्रभाषा आदि रुपों में कार्यरत है और विश्वभाषा बन रही है ।

भारत में प्रतिवर्ष 14 सितम्बर का दिन हिन्दी -दिवस के रुप में मनाया जाता है । 14 सितम्बर 1949 के दिन संविधान में हिन्दी को राजभाषा घोषित करनेवाली धारा स्वीकृत की थी । विविध जातियों, धर्मों एवं भाषाओंवाले इस देश को, जिसे कवी रवीन्द्र ने महामानवे समुद्र कहा है, उसे एकता के सूत्र में पिरोने का काम हिन्दी ही करती है । इसलिए राजभाषा होने के साथ साथ विशाल जन-समुदाय द्वारा बोली-समझी जाने के कारण हिन्दी को हमारे देश की राष्ट्रभाषा होने का गौरव भी प्राप्त है ।

विश्व की एक प्राचीन, समृद्ध, सरल एवं सुगम भाषा होने के साथ-साथ हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा है । अत: [illegible] प्रति अपना प्रेम और सम्मान प्रकट करना हमारा राष्ट्रीय कर्तव्य है । इसी कर्तव्य के निर्वाह हेतु 14 सितम्बर का दिन हिन्दी - दिवस के रुप में मनाया जाता है । इतना ही नहीं, कई शासकीय-अशासकीय कार्यालयों, बैंकों एवं शिक्षण संस्थाओं में हिन्दी के प्रचार-प्रसार एवं सम्मान में हिन्दी-सप्ताह तथा हिन्दी -पखवाड़ा मनाया जाता है । कई स्थानों पर तो काव्य लेखन-वाचन, कहानी-वाचन, कहानी-लेखन, विविध विषयों पर निबन्ध एवं भाषण, नाटक तथा एकांकियों का मंचन, अतिथि-व्याख्यान आदि विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन करके इसे एक उत्सव की तरह मनाया जाता है । किसी भी देश का राष्ट्रगीत, राष्ट्रध्वज एवं राष्ट्रभाषा उस देश के

मानबिन्दु होते हैं । अत: राष्ट्रगीत एवं राष्ट्रध्वज के समान ही राष्ट्रभाषा हिन्दी और देवनागरी लिपि के संरक्षण तथा प्रचार एवं प्रसार हेतु किये जानेवाले ये आयोजन राष्ट्रभाषा के प्रति हमारे प्रेम को प्रमाणित करते हैं।

हिन्दी हमारे देश की अपनी भाषा है । विविध भाषा-भाषी लोगों एवं प्रान्तों के बीच यह सम्पर्क-भाषा के रुप में परिलक्षित होती हैं । हिन्दी इसलिए बड़ी नहीं कि इस देश में उसके बोलनेवालों की संख्या अधिक है, वह इसलिए बड़ी है, क्योंकि इस देश की करोड़-करोड़ जनता के हृदय और मस्तिष्क की भूख मिटाने का वह जबरदस्त माध्यम है ।

कश्मीर से कन्याकुमारी तक, साक्षर से निरक्षर तक प्रत्येक वर्ग का व्यक्ति हिन्दी भाषा को आसानी से बोल-समझ लेता है, पर-प्रान्तीय अथवा अन्य भाषीय लोगों के बीच हिन्दी का प्रयोग कर वह अपने विचारों को आसानी से पहुँचा सकता है । इसलिए इसे सामान्य जनता की भाषा, अर्थात जनभाषा कहा गया है । अत: हिन्दी-दिवस मनाने के पीछे एक उद्देश्य यह भी है कि शासकीय एवं अशासकीय क्षेत्रों में जनता के लिए किये जानेवाले कार्य एवं व्यवहार के लिए जनभाषा का ही प्रयोग हो न कि अपनी सुविधानुसार अंग्रेजी भाषा का । कुछ विशेष शहरी वर्ग को छोड़कर देखा जाय तो सामान्य ग्रामीण जनता के लिए अंग्रेजी में बातचीत कर पाना एवं व्यवहारिक रुप में उसका प्रयोग कर पाना कठिन ही है, क्योंकि, उसकी अपनी भाषा नहीं है । अत: अपनी राष्ट्रभाषा में उसके सम्पूर्ण व्यवहार पर उसका पुरा अधिकार है और कहीं-न-कहीं हिन्दी-दिवस और हिन्दी पखवाड़ा इसी अधिकार की प्रतिपुष्टी करता है ।

राष्ट्रीय कर्तव्य एवं अधिकार की दृष्टि से भी हिन्दी के प्रयोग एवं प्रचार हेतु मनाया जानेवाला हिन्दी-दिवस एवं हिन्दी-पखवाड़ा विशेष महत्वपूर्ण है । जो न केवल हिन्दी के प्रयोग का अवसर प्रदान करता है, बल्कि इस बात का भी भान दिलाता है कि हिन्दी का प्रयोग भारतीय जनता का अधिकार है । जिसे उससे छिना नहीं जा सकता । हिन्दी-दिवस हम सभी को यह जानने का अवसर भी प्रदान करता है कि - हम अपनी रोजमर्रा की जिंदगी में हिन्दी का कितना प्रयोग करते है ? अर्थात् हम अपने राष्ट्र एवं राष्ट्रभाषा से कितना प्रेम करते है । हम जानते है कि इतने बड़े जनसमुदाय वाले देश में अपने अधिकार की लड़ाई आसान नहीं है और यदि महात्मा गांधी, स्वामी दयानंद सरस्वती, पंडित मदनमोहन मालविया, राजर्षी पुरुषोत्तमदास टण्डन, आचार्य केशव सेन, काका कालेलकर तथा गोविंद वल्लभ पंत जैसे अनेक महान व्यक्तियों के अनेक वर्षों में किए गये अथक प्रयासों से हमें हिन्दी को राष्ट्रभाषा कहने का अधिकार मिला है, तो हम उसे क्यों छोडे ?

जहाँ पराई भाषा होने के बाद भी अंग्रेजी को सह राजभाषा का अधिकार प्राप्त है, वही अपने दैनंदिन एवं कार्यालयीन व्यवहार में हिन्दी का अधिकाधिक प्रयोग करते हुए राजभाषा हिन्दी के महत्व को जाने-समझे एवं उसके विकास में अपना भी योगदान दें । कोई भी भाषा तब तक नहीं मर सकती, जब तक सामान्य जनता में उसका प्रयोग निरंतर होता रहें । इस नाते भी हमारा यह कर्तव्य बनता हैं कि हम अपनी राजभाषा का प्रयोग करते रहें और उसे निरंतर गतिशील बनाये रखने में महत्वपूण भूमिका निभाएँ ।

कोई भी भाषा तब और भी समृद्ध मानी जाती है, जब उसका साहित्य भी समृद्ध हो । आदिकाल से अब तक हिन्दी के आचार्यों, सन्तो, कवियों, विद्वानों, लेखकों एवं हिन्दी-प्रेमियों ने अपने उत्कृष्ट ग्रन्थों, अद्वितीय रचनाओं एवं लेखों से हिन्दी को समृद्ध किया है । परन्तु हमारा भी कर्तव्य है कि हम अपने विचारों, भावों एवं मतों को विविध विधाओं के माध्यम से हिन्दी में अभिव्यक्त करें एवं इसकी समृद्धि में अपना योगदान दें ।

आज देश का सुशिक्षित वर्ग अपने दैनंदिन व्यवहार में अंग्रेजी का अधिकाधिक प्रयोग कर रहा है । अंग्रेजी अन्तर्राष्ट्रीय भाषा है साथ ही सुविधाजनक होने के नाते हमारे देश की सह-राजभाषा भी मान्य की गयी है । अत: अंग्रेजी भाषा को जानना-समझना एवं सीखना आज के अत्याधुनिक वैश्विक परिवेश की आवश्यकता बन गयी है । किसी भी अन्तर्राष्ट्रीय भाषा को जानना-समझना-सीखना गलत नहीं, परन्तु अपनी राष्ट्रभाषा को भूलकर केवल विदेश भाषा का ही सर्वथा प्रयोग करते रहना राष्ट्रभाषा की अवहेलना करने के समान है । हम भले ही अंग्रेजी का प्रयोग

करें, परन्तु हिन्दी का भी प्रयोग करते रहें और राष्ट्रभाषा के प्रति अपना प्रेम और सम्मान बनाये रखें । हम यह कभी न भूलें कि हिन्दी विश्व की प्राचीनतम भाषाओं में से एक है और आज के दौर में अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में जड़ जमा कर विश्व के आकर्षण का केन्द्र बन रही है । हिन्दी की अद्वितीय रचनाओं ने पहले से ही विदेशी विद्वानों, भारतीय संस्कृति एवं साहित्य के प्रेमियों को अपनी ओर आकृष्ट किया है । परन्तु आज उसकी अस्मिता एवं गरिमा ने उसे अन्तर्राष्ट्रीय भाषा की सूची में पहुँचा दिया है । कहीं बोलचाल के रुप में, कहीं फिल्म और संगीत की धुन में, कही भक्ति और दर्शन में, तो कहीं प्रवासी भारतीय के हिन्दी-साहित्य में हिन्दी विश्व में पैठती नजर आ रही है । अमेरिका, यूरोप एवं एशिया के अनेक छोटे-बड़े शहरों एवं देशों में बसे प्रवासी भारतीय भी हिन्दी में रचनाएँ कर रहे हैं । जिससे हिन्दी संस्कृति का भी दर्पण बनती जा रही है, जिसमें झाँककर विश्व-संस्कृति के विविध रुप को देखना-परखना आसान हो गया है ।

हिन्दी के अन्तर्राष्ट्रीय स्वरुप को देखते हुऐ, 10 से 14 जनवरी, 1975 के दिन नागपुर में आयोजित प्रथम विश्व हिन्दी सम्मेलन में मॉरिशस, नयी दिल्ली, त्रिनिडाड, टोबैगो, लन्दन, सूरीनाम एवं न्यूयॉर्क-जैसे देशों द्वारा 10 जनवरी का दिन विश्व हिन्दी-दिवस के रुप में मनाये जाने का संकल्प लिया गया । इस प्रकार जब विश्व स्तर पर हिन्दी-दिवस मनाया जाने लगा है, तो निश्चय ही 14 सितम्बर का राष्ट्रीय हिन्दी दिवस हिन्दी के गौरव को मनाये जाने का दिन है ।

कम्प्यूटर और इंटरनेट में यूनीकोड़ ने देवनागरी लिपि में हिन्दी को पूरे विश्व में उपलब्ध करवाकर ई-हिन्दी को सरल एवं सुगम बना दिया है । जिससे ब्लॉग एवं ट्वीटर में हिन्दी की सुविधा के कारण विभिन्न देशों में हिन्दी-प्रेमियों में निरन्तर हिन्दी में विचारों का आदान-प्रदान हो रहा है ।

हमारे लिए यह भी एक गौरव की बात है कि विभिन्न विकसित एवं सम्पन्न देशों के विश्वविद्यालयों के विद्यार्थी सांस्कृतिक आदान-प्रदान उपक्रम के अन्तर्गत हमारी संस्कृति को करीब से जानने-समझने के लिए हमारे देश में आकर हिन्दी सीख रहें है । कहना न होगा कि जब से हिन्दी विश्व-भाषा बनी है, तब से विश्वस्तर पर हिन्दी जानने-समझने एवं बोलनेवाली का मान बढ़ाया है एवं विभिन्न उन्नतिशील देशों में हिन्दी के विद्वानों एवं जानकारों की माँग की जा रही है ।

अनेक वर्षों से हिन्दी ने विविधताओं के इस देश में सभी भाषा-भाषियों को एक सूत्र में पिरोने का कार्य किया है । हमारे लिए गौरव की बात है कि जिस भाषा ने राष्ट्र को जोड़ा, वही हिन्दी आज हमें विश्व से जोड़ रही है । विगत वर्षों में भले ही हिन्दी के प्रचार-प्रसार में उतार-चढ़ाव आये हों, परन्तु आज उसके विकास को रोक पाना असम्भव है । कुल मिलाकर कहें, तो वैश्विकरण के इस दौर में हिन्दी का भविष्य निश्चय ही उज्ज्वल है । अत: समस्त राष्ट्र-प्रेमी-हिन्दी-प्रेमी गर्व से हिन्दी-दिवस मनाएँ और गौरव का अनुभव करें, क्योंकि हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा है ।

* हिंदी अब सारे भारत की राष्ट्रभाषा बन गई है। इसके अध्ययन एवं इसे सर्वोत्तम बनाने में हमें गर्व होना चाहिए ।
- सरदार वल्लभ भाई पटेल

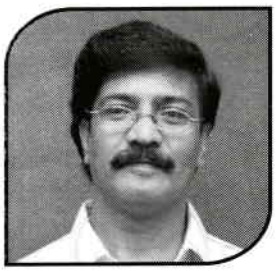

मानसिक तनाव - हमारा सबसे बड़ा दुश्मन

रवि गिरहे
बैंक ऑफ़ इंडिया

वर्तमान युग प्रतिस्पर्धा का युग है । हम किसी भी क्षेत्र में कार्यरत हो जानलेवा प्रतिस्पर्धा हमारा पीछा नही छोड़ती. केजी में पढ़ने वाले बच्चों से लेकर तो कंपनी में कार्य करने वाले कार्यपालक निदेशक तक सभी आज मानसिक तनाव से गुजर रहे हैं। शायद अब यह तनाव हमें विरासत में ही मिल रहा है । अगर हम प्रतिस्पर्धा में पीछे हो गए तो हम समाप्त हो जाएंगे इस दुर्भावना से हम सभी ग्रस्त हो जाने के कारण मानसिक तनाव ने हमारे दिमाग में घर बना लिया है, जिससे हमारी असाधारण क्षमता को भी ग्रहण लगता जा रहा है ।

विशेषज्ञोंके अनुसार वर्तमान में डॉक्टर्स के पास जाने वाले नब्बे प्रतिशत मरीज तनाव से संबंधित रोगों के कारण आते है । मानसिक तनाव का प्रमुख कारण यह है कि जब हमारे शरीर या मन को किसी चुनौती का सामना करना पड़ता है तो हमारी चयापचय प्रक्रिया तेज हो जाती है, रक्तचाप, हृदय गति और नाड़ी की गति बढ़ जाती है और शरीर में खून का दौरा तेज होता है । शरीर में एड्रनलीन की मात्रा बढ़ जाती है । यह स्थिति अधिक देर बनी रहे तो कई शारीरिक व मानसिक समस्याएँ पैदा हो जाती है ।

तनाव की एक प्रचलित परिभाषा रिचर्ड एस. लझारस द्वारा इसप्रकार दी गई :- "Stress is a condition or feeling experienced when a person perceives that demands exceed the personal and social resources the individual is able to mobilize." मानसिक तनाव धीरे-धीरे शारीरिक तनाव में परिवर्तित होने लगता है जिससे हमारे स्वभाव पर उसका असर पड़ता है, हम चिड़चिड़े होने लगते है, इससे कुछ लोगों को शराब या सिगारेट पीने के लत लग जाती है जो शरीर को कुछ समय के लिए तनाव से मुक्त कर सके. तनाव से रात में नींद नहीं आती जिससे हमारी समस्याएँ अधिक गंभीर हो जाती है । समय पर चिकित्सा न होने से हमारे शरीर की अधिक हानि होने लगती है । काम के अत्याधिक तनाव से हमें हृदय की बिमारियों से भी जूझना पड़ता है । शारीरिक मेहनत कम होने से हमारा हार्ट रेट तथा ब्लड प्रेशर बढ़ जाता है जिसका सीधा असर हमारी धमनियों पर आता है तथा वह डॅमेज होने लगती है, धमनियाँ सकुडने से खून तथा ऑक्सिजन हार्ट तक पहुँचने में काफी करेशानी होती है, जो हार्ट अटॅक में भी तबदिल हो सकती है । तनाव से हमारी मानसिक क्षमता पर असर पहुँचता है, हम डिप्रेशन में आ जाते है तथा ब्रेन हॅमरेज की भी नौबत आ सकती है । तनाव से हमारे मन में सदैव नकारात्मक विचार आते है जो कमी आत्महत्या के लिए भी प्रेरित कर सकते हैं । अत्याधिक तनाव से डायबिटीस, पेट का अल्सर, बीपी जैसी बिमारियाँ हमारे शरीर में हमेशा के लिए घर बना सकती है ।

मानसिक तनाव एक ऐसी बिमारी है जिसे हम सकारात्मक विचारधारा से दूर कर सकते है । इसके लिए निम्न कुछ बातों पर अंमल करना आवश्यक है ।

* हमारे तनाव का योग्य विश्लेषण कर उसका नियोजन करे ।

* समस्याओं को समझ कर ही उस के निराकरण का निर्णय लिया जाए ।

* बच्चों को बचपन से ही पढ़ाई के साथ अच्छी-बुरी बातों पर होने वाले परिणामों से अवगत कराएँ ।

* शारीरिक तथा मानसिक आरोग्य का योग्य मिलाप होना आवश्यक ।

* नकारात्मक परिस्थिती में भी सकारात्मक रहकर कार्य करना सीखे ।

* अनावश्यक शंकाओं का विचार करने के बदले वर्तमान समस्याओं को सुलझाने पर जोर दे ।

* हीन भावना को मन में पनपने न दें ।

* अति आत्मविश्वास से कार्य न करें । अपनी क्षमता के अनुरुप ही कार्य करें।

इसके साथ ही हमें नियमित व्यायाम तथा मन की शांति के लिए योग्य प्रयास करने होंगे । इसके लिए समय निकालकर प्राणायाम, मनन, चिंतन करना आवश्यक है । मानसिक तनाव वाली बातों से कुछ समय के लिए बाहर आना आवश्यक है । रात को आवश्यक नींद लेना जरुरी है । जब हम अत्याधिक तनावग्रस्त हैं तो अपनी समस्याओं को अपने मन में दबाकर न रखे, अपनी समस्या के विषय में अपने पति, पत्नी या किसी निकट मित्र से खुलकर चर्चा करें । अत्याधिक तनाव के समय कुछ समय अकेले में अपनी पसंद की बातें कर तनाव को दूर कर सकते हैं । कुछ देर के लिए कुर्सी पर आरामदेह मुद्रा में बैठकर आँखे बंद कर अपनी मांसपेशियों को ढीला छोड़ कर धीमी गति से साँस लेते रहें । मन ही मन में भगवान का स्मरण करें या कोई मंत्र बार-बार दोहराते रहे । यदि आपका मन भटक जाए तो वापस उसी शब्द या मंत्र पर आ जाएँ, इसे दस या बीस मिनिट तक करने से तनाव से मुक्ति मिल सकती है ।

तनावरोधी भोजन पर जोर देना होगा । कुछ भोजन ऐसे है, जो हमारे शरीर को तनाव से लड़ने की शक्ति देते है । संतरे, दूध व सूखे मेवे में पोटेशियम की मात्रा अधिक होती है, जो हमारे दिमाग को शक्ति प्रदान करती है । आलू में विटामिन बी समूह के विटामिन काफी मात्रा में होते है, जो हमें चिंता और खराब मूड का मुकाबला करने में सहायता करता है । चावल, मछली, फल्लियाँ और अनाज में भी विटामिन 'बी' होता है, जो दिमागी बिमारियों और अवसाद को दूर रखने में सहायक है । हरी पत्ते वाली सब्जियाँ, गेहूँ, सोयाबीन, मूँगफली, आम और केले में मैग्नीशियम की मात्रा अधिक होती है, जो हमारे शरीर को तनाव से लड़ने में सहायता करती है ।

विशषज्ञों के अनुसार तनाव की स्थिति में थोड़ा-थोड़ा करके कई बार खाना तनाव को दूर भगाने में सहायक हो सकता है । इसे उन लोगो को भी सहायता मिल सकती है, जो तनाव की स्थिति में अतिरिक्त खाने के आदी हैं । थोड़ा-थोड़ा खाने से शरीर को भी शक्ति मिलती रहती है ।

इसके बाद भी आप मानसिक तनाव से अपने आप को दूर नही कर पाते तो अपने डॉक्टर से योग्य सलाह ले सकते है । मानसिक तनाव के लिए आपका दृष्टिकोन सकारात्मक रहना आवश्यक है । किसी भी समस्यासें जूझने के लिए अपने मन को अगर आप तैयार रखते है तो निश्चित ही मानसिक तनाव आपपर कभी भी हावी नही हो पाएगा ।

स्वेट मार्डेन कहते है, ''मनुष्य की दशा उस घ[illegible] समान है जो ठीक तरह से रखी जाए तो सौ वर्ष तक काम दे सकती है और लापरवाही से बरती जाए तो जल्दी बिगड़ जाती है ।''

अगर हमारा मन साहस से भरा हुआ हो तो हमारे मन से तनाव या डर अपने आप दूर हो जाएगा । हमें यह सत्य समझना चाहिए कि मानसिक तनाव हमारा सबसे बड़ा दुश्मन है जो अंदर ही अंदर हमारे शरीर को खोखला करता है, इसीलिए कहते है कि जान है तो जहान है । तो दोसतों आईये हमारे जीवन से मानसिक तनाव को भगाने का प्रयास करे ।

* इंग्लैंड में हमारा
क्रांतिकारियों का दल था ।
हम प्रतिदिन दुहराते थे
कि हमारा देश हिंदुस्तान,
हमारा गति वंदेमातरम,
हमारी राष्ट्रभाषा हिंदी है ।

– स्वातंत्र्यवीर वि. दा. सावरकर

हिन्दी दिवस
हमारी कसौटी का दिवस

चाहे डगर हो कोई, आसान नहीं है मंजिल
किरणें नयी उभार कर, भाषा ज्योति जलाएँ
धीरे-धीरे प्रगति की गति, लक्ष्य की ओर बढ़े
भाषा के हम सैनिक, रह-रह क्यों घबड़ाएँ ।

पानी बन घुल-मिल जाना, कैसी है यह सोच
अपनी एक इयत्ता को, बरबस क्यों घुलाएँ
चिंतन, सोच, कर्म सब, प्रतिबद्ध, समर्पित
अपनी विशिष्टता से क्यों न, सबको हर्षाएँ

भग्न हो जाएँ शब्द और अपूर्ण अभिव्यक्ति
बहुभाषी पथ पर, देवनागरी कैसे सजाएँ
तनिक विमुखता कर दे, धराशायी लक्ष्य
अपनी विशेषज्ञता को, क्यों खुद भरमाएँ

मिटती नहीं पहचान, मिल जाये एक बार तो
औरों की पहचान में, खुद को क्यों गुमाएँ
अभी बहुत बाकी है, चलना संग राजभाषा
प्रज्ञा की गुंजन में, मिल गीत नया बनाएँ ।

धीरेंद्र सिंह
(मुख्य प्रबन्धक, बैंक ऑफ़ इंडिया)

प्राकृतिक आपदा

खेल ये कुदरत का नही इंसानी करतूत
मोहना तेरे विकास का ये है असली रुप
पीटे ढोल विकास का खोदे रोज पहाड़
कुदरत भी कितना सहे, तेरा ये खिलवाड़
बड़ी मशीने देखकर रोये खुब पहाड़
कैसे झेलेगा भला जब आएगी बाढ
खंड खंड बढता रहा 'हाय' उत्तराखंड
मलबा बन गई जिंदगी, रुका नही पाखंड
आपदा राहत कोष से होंगे कई अमीर
जनता बिन राहत मरे, वे खाऐंगे खीर
धरम करम के चोचले, दान पुण्य भी खूब
भक्त बचे कैसे भला, खुद भगवान गए डूब
गाँव बहे और हो गई, खाली यहां जमीन
बिल्डर लेकर आएगा, अबके नई मशीन
ना उजाड़ो इन वनों को,
जो प्राकृतिक आपदा से बचाते है
रोक कर वर्षा का जल
जो भूमी का जलस्तर बढाते हैं ।
आज इन्हें बचाओगे तो,
कल जीवन बच जाएगा,
दिख रहा है जो भविष्य खतरे में,
खतरे से बाहर आ जाएगा ।
लगाकर पेड़ ज्यादा से ज्यादा,
हमे इस जमीं को सजाना है,
पूज्यनीय है यह प्रकृती,
इस संजिवन को बचाना है,
प्राकृतिक आपदा पर विजय पाना है,
हर समस्या से लढना है ।

कम्प्युटर का नाता जुड़ा हिन्दी से

श्री. कृष्णात खांडेकर
रत्नागिरी

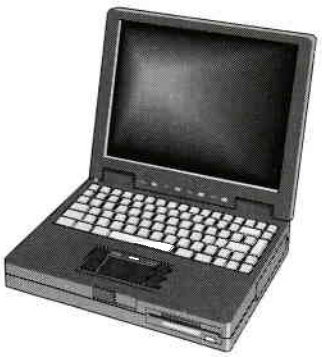

प्रौद्योगिकी के दूसरे चरण के रुप में विडिओं वर्क्स के कार्य को भी हिन्दी में प्रदर्शित करने के लिए आवश्यक साफ्टवेअर का विकास किया गया है । जिसकी सहायता से रेल्वे आरक्षण, गाड़ियों का आवागमन, हवाई जहाजों को आगमन -प्रस्थान आदि संबंधित सूचनाएँ टी.वी., मानिटर के जरिये हिन्दी में प्रदर्शित की जा रही है ।

सी-डैक कंपनी ने कम्प्यूटर में हिन्दी सिखने के लिए एक ऐसा बहुआयामी साफ्टवेअर पैकेज विकसित किया है जिससे हम न केवल हिन्दी की संरचना की बारिकियों को समझ सकते बल्कि प्रामाणिक उच्चारण और चित्रों की सहायता से हिन्दी पढ़ना, बोलना और लिखना सीख सकते है। इस साफ्टवेअर को लीला (LILA) कहते है । यह वस्तुत: Learn Indian, Languages Through, Artificial, Intelligence का एक्रोनिम है । इसकी सहायता से कार्यालयीन कामकाज में हिन्दी के प्रयोग के लिए बड़ी सुविधा हो रही है । कम्प्यूटर द्वारा अनुवाद के लिए शोधकार्य जारी है आज अंग्रेजी से हिन्दी में कम्प्यूटर द्वारा अनुवाद की सुविधा उपलब्ध हैं । भारत एक बहुभाषी देश होने के कारण लिप्यांतरण का कार्य भी महत्वपूर्ण है । भारत के केंद्रसरकार के अधीन सभी क्षेत्र और कार्यों की सूचना हिन्दी में लिप्यांतर करनी जरुरी है । इसके लिए भी रोमन से हिन्दी में लिप्यांतरण के कई साफ्टवेअर उपलब्ध है । कम्प्यूटर के प्रयोग से हिन्दी लेखक को अनावश्यक रुप से अपने लेखन के लिए कागज बरबाद करने की आवश्यकता नहीं है । वे आसानी से अपनी रचना कम्प्यूटर पर उतार सकते है और जल्द ही एक क्लिक से विश्व तर पहुँचा सकते है । हिन्दी के विशालकाय ग्रंथों को कम्प्यूटर ने अब छोटे रुप में आसानी से उपलब्ध करा दिया हैं । आज कम्प्यूटर पर हम हिन्दी में किसी भी क्षेत्र से जुड़ा काम कर सकते है । जहाँ तक हिन्दी पत्राचार का प्रश्न है, कम्प्यूटर की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है । क्योंकि किसी भी कार्यालय से भेजे जानेवाले अधिकांश पत्रों की भाषा प्राय: एक तरह की होती है । इन पत्रों का मानकीकरण करके उन्हें यदि एक बार कम्प्यूटर में सुरक्षित (Save) करा दिया जाय तो अगली बार उनका प्रयोग करते समय केवल नाम, तारिख, पत्रांक अथवा कोई भी याद रखने के लिए दिया गया नाम काफी होता है । कार्यालय के सभी पत्राचार मोटे-मोटे रजिस्टर, सभी प्रकार की सूचनाएँ, दस्तावेज सरलता से कम्प्यूटर में सुरक्षित रखी जा रही है ।

आज जीवन का हर क्षेत्र कम्प्यूटर से जुड़ा है और कम्प्यूटर से कोई भी क्षेत्र अछूता नहीं है । कम्प्यूटर अपनी निजी भाषा में कार्य करता है उस भाषा के साथ दुनिया की हर भाषा अपने आप को जोड़ सकती है । कम्प्यूटर हर भाषा में कार्य हर भाषा में करने की क्षमता रखता है । आज भारत में कम्प्यूटर पर हिन्दी के प्रयोग करनेवाले लोगों तथा क्षेत्रों की संख्या दिन-ब-दिन बढ़ती जा रही है । हिन्दी से जुड़ा कोई भी क्षेत्र आज कम्प्यूटर से अछूता नहीं रहा है । कम अधिक प्रमाण में हिन्दी का कम्प्यूटर में प्रयोग हो रहा है । आशा है कि एक दिन पूरे भारत का कार्य हिन्दी भाषा के माध्यम से कम्प्यूटर पर हो ।

भारत देश का परमाणु उर्जा कार्यक्रम

श्री. अ. द. कावळे
वरिष्ठ प्रबंधक, न्युक्लियर पावर कं.

''शांतिपूर्ण तरीके से विकास के लिए परमाणु उर्जा का उपयोग'' यह नीति स्वतंत्र भारत ने अपनायी है । परमाणु उर्जा का विषय संविधान के अनुसार केंद्र सरकार के अधीन है । भारत में केंद्र सरकार का परमाणु उर्जा विभाग परमाणु उर्जा के संबंधमें योजना बनाकर उसको कार्यान्वित और नियंत्रण करता है । यह काम अणुउर्जा आयोग द्वारा किया जाता है । परमाणु उर्जा का सबसे बडा योगदान बिजली निर्माण में है । परमाणु बिजली घरोंका आरेखन, सिव्हील कन्स्ट्रक्शन, यंत्र उत्थापन करके प्रवर्तन में लाना, प्रचालन, डिकमशनींग इन सब बातों में क्षमता रखनेवाली कंपनी एन.पी.सी.आय.एल गत 27 वर्षोंसे परमाणु उर्जा क्षेत्र में कार्यरत है । अभी तक 21 परमाणु इकाईयों का निर्माण करके उसके प्रचालन का अनुभव रखनेवाली एक आंतरराष्ट्रीय कंपनी है । भारत में कार्यरत परमाणु बिजली घरों का ब्यौरा इस प्रकार है ।

संयंत्र	स्थान	इकाईयां	रिएक्टर की प्रकार	क्षमता मेगावांट	शुरुवात की तारीख
तारापुर ॲटोमिक पॉवर स्टेशन	तारापुर महाराष्ट्र	1	बीडब्लूआर	160	28 ऑक्टो.1969
		2	बीडब्लूआर	160	28 ऑक्टो.1969
		3	पीएचडब्लूआर	540	18 ऑगस्ट 2006
		4	पीएचडब्लूआर	540	12 सप्टेंबर 2005
राजस्थान ॲटोमिक पॉवर स्टेशन	रावतभाटा, राजस्थान	1	पीएचडब्लूआर	100	16 डिसेंबर 1973
		2	पीएचडब्लूआर	200	1 एप्रिल 1981
		3	पीएचडब्लूआर	220	1 जून 2000
		4	पीएचडब्लूआर	220	23 डिसेंबर 2000
		5	पीएचडब्लूआर	220	4 फेब्रुवारी 2010
		6	पीएचडब्लूआर	220	31 मार्च 2010
मद्रास ॲटोमिक पॉवर स्टेशन	कलपक्कम, तामिलनाडू	1	पीएचडब्लूआर	220	27 जानेवारी 1984
		2	पीएचडब्लूआर	220	21 मार्च 1986
कैगा जनरेटिंग स्टेशन	कैंगा, कर्नाटक	1	पीएचडब्लूआर	220	16 नोव्हेंबर 2000
		2	पीएचडब्लूआर	220	16 मार्च 2000
		3	पीएचडब्लूआर	220	6 मे 2007
		4	पीएचडब्लूआर	220	20 जानेवारी 2011
नरौरा ॲटोमिक पॉवर स्टेशन	नरौरा उत्तर प्रदेश	1	पीएचडब्लूआर	220	1 जानेवारी 1991
		2	पीएचडब्लूआर	220	1 जुलै 1992
काकरापार ॲटोमिक पॉवर स्टेशन	काकरापार गुजरात	1	पीएचडब्लूआर	220	1 जुलै 1992
		2	पीएचडब्लूआर	220	6 मे 1993
कुडनकुलम न्युक्लिअर पॉवर प्रोजेक्ट	तामिलनाडू	1	एलडब्लूआर	1000	2014

निर्माणाधीन परियोजनाएँ

संयंत्र	स्थान	इकाईयां	रिएक्टर की प्रकार	क्षमता
कुडनकुलम न्युक्लिअर पावर प्रोजेक्ट	तामिळनाडू	2	एलडब्लूआर	1000
काकरापार ॲटोमिक पॉवर स्टेशन	काकरापार, गुजरात	3	पीएचडब्लूआर	700
		4	पीएचडब्लूआर	700
राजस्थान ॲटोमिक पॉवर स्टेशन	रावतभाटा, राजस्थान	7	पीएचडब्लूआर	700
		8	पीएचडब्लूआर	700

बीडब्लूआर – बॉयलिंग वॉटर रिॲक्टर
पीएचडब्लूआर– प्रेशराइज्ड हेवी वॉटर रिॲक्टर
एलडब्लूआर – लाइट वॉटर रिॲक्टर

इसके अलावा, भारत सरकारने महाराष्ट्र के रत्नागिरी जिले में जैतापूर, हरियाणा में गोरखपुर, आन्ध्र प्रदेश में कोवाडा, गुजरात में भावनगर के पास मिठीविर्दी, मध्यप्रदेश जबलपुर के पास चूटका और पश्चिम बंगाल में हरिपुर में नये परमाणू बिजलाघरों के निर्माण करने की योजनाओं को तत्वत: स्वीकृत किया है ।

इस कार्यक्रम में अणुउर्जा विभाग के निम्नलिखित संस्थाओं का योगदान है ।

1) भाभा परमाणु अनुसंधान केंद्र –

यहाँ परमाणु विज्ञान और तंत्रज्ञान के हर एक पहलू पर अनुसंधान होता है । भाभा परमाणु अनुसंधान केंद्र में विकसित प्रणालियॉ प्राधागिक क्षेत्र में उपयोग में लायी जा रही है । बिजली निर्माण के अलावा परमाणु उर्जा का उपयोग, मनुष्यके स्वास्थ्य चिकित्सा के लिए वैश्विकस्तर के यंत्रसामग्री का निर्माण (जैसे की भाभाट्रॉन टेलीथैरपी मशीन आदि) रेडिएशन औषधियों का निर्माण (Radiation medicine), खाद्य और कृषिक्षेत्र में उत्पादनों की शेल्फ लाइफ बढाने की तकनिक, अधिकतर उत्पादन देनेवालें दाल, मुंगफली आदि कृषि उत्पादन के बेहतर बीजों का निर्माण, कीट नाशक, जीव नियंत्रण इस क्षेत्र में भी बडा योगदान होता है ।

220 मेगा वांट क्षमता के (पीएचडब्लूआर) रिएक्टरोंको निर्माण से लेकर उनकी क्षमता, प्रथम 540 MWe और अब 700 MWe तक विकसित करने में भाभा परमाणु अनुसंधान का, एन.पी.सी.आय.एल. को लगातार सहयोग मिल रहा है

2) परमाणु खनिज अन्वेषण एवं अनुसंधान निदेशालय (ॲटोमिक मिनरल्स डिव्हीजन) जो युरेनियम खनिज की खोज में कार्यरत है ।

3) युरेनियम कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड (युसीआयएल) के कारखानोंमें, खदानो सें निकाले हुए कच्चे युरेनियम के खनिजपे प्रक्रिया करकें यूरेनियम धातु प्राप्त करते हैं।

4) न्युक्लिअर फ्युएल कॉम्प्लेक्स हैदराबाद – यूरेनियम धातु के इंधन बंडल बनाना और रिएक्टरों में जरुरी शीतलक पाइपिंग का निर्माण करता ।

5) इलेक्ट्रॉनिक्स कार्पोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड (हैदराबाद) - रिॲक्टरोको जरुरी इन्स्ट्युमेंट्स और कंट्रोल सिस्टम तैयार करना ।

6) भारी पानी विभाग (हेवी वॉटर बोर्ड) - रिएक्टरों को जरुरी ड्युटेरियम ऑक्साईड (D_2O) भारी पानी के कुल नौ सयंत्र भारत में कार्यरत है । भारत भारी पानी विदेशों में भी निर्यात करता है ।

7) भाभा परमाणु अनुसंधान केंद्र द्वारा विकसित वेस्ट मॅनेजमेंट (अपशिष्ट व्यवस्थापन) और, पॉवर रिएक्टर फ्युएल रिप्रोसेसिंग प्लांट के द्वारा यह कार्यक्रम आगे ले जा रहा है ।

हमारा परमाणु उर्जा कार्यक्रम तीन पायदानों में विभाजित है । पहले पायदान पर पीएचडब्यूआर रिएक्टरों में नैचरल युरेनियम इंधन का उपयोग होगा । पीएचडब्यूआर रिएक्टरो में उपयोग में लाऐं गए नैचरल युरेनियम इंधन पर प्रक्रिया करके प्ल्युटोनियम इंधन मिलेगा । दुसरे पायदान में यह प्ल्युटोनियम फास्ट ब्रिडर रिएक्टर चलानें में काम आयेगा । फास्ट ब्रिडर रिएक्टर में थोरीयम 232 का ब्लैंकेट करके (प्ल्युटोनियम इंधन के बंडल को थोरियम 232 के बंडल से ढककर) युरेनियम 233 इंधन मिलेगा । तीसरे पायदानपे युरेनियम 233 इंधन का उपयोग किया जाएगा । यह कार्यक्रम हमारे देश की बिजली की जरुरत को पूरा करनें में बडी मदद करेगा । पीएचडब्यूआर रिएक्टरों के निर्माण और प्रचालन में क्षमता प्राप्त करनेके बाद, अब तामिलनाडू में चेन्नईसे 45 किमी दुरीपर कल्पक्कम मे 500 MWe क्षमता के फास्ट ब्रिडर रिएक्टर का निर्माण जारी है और जल्दी ही उसमे बिजली निर्माण का कार्य शुरु होगा । तीसरे स्तरके रिएक्टरों का आरेखन, यंत्रसामग्री इसपर संशोधन जारी है ।

* अंग्रेजी शिक्षा ने शिक्षित भारतीयों को निर्बल और नकलची बना दिया है । कोई देश नकलचियों की जाति पैदा करके राष्ट्र नहीं बन सकता ।

- राष्ट्रपती महात्मा गांधी

* हिंदी के बिना जनतंत्र की बात केवल धोका है ।

- अंबिका प्रसाद वाजपेयी

* हम सब भारतवासियों का यह अनिवार्य कर्तव्य है कि हम हिंदी को अपनी भाषा के रुप में अपनाएं ।

- डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर

सूचना प्रौद्योगिकी एवं हिन्दी भाषा

डॉ. शाहू द. मधाळे
रत्नागिरी

कबीर के दोहे हो या परसाई का व्यंग्य, प्रेमचंद के उपन्यास इसके लिए लायब्ररी जाने की आवश्यकता नहीं । राजभाषा डॉट कॉम पर बिनी किसी हिन्दी सॉफ्टवेअर के आप किसी भी कम्प्यूटर पर दुनियाभर में देख सकते हैं । अब ई-मेल करने के लिए रोमन लिपि की आवश्यकता नहीं । अब राजभाषा डॉट कॉम पर जब चाहे देख-सुन सकते है । डायनॅमीक फॉन्ट्स पर बनाई गयी इस वेब में हिन्दी देवनागरी में अब यह सुलभ हो गया है ।

सूचना प्रौद्योगिकी ने पूरी धरती को एक गाँव बना दिया है । इसने विश्व की विभिन्न अर्थव्यवस्थाओं को जोड़कर एक वैश्विक अर्थव्यवस्था को जन्म दिया है । यह नवीन अर्थव्यवस्था अधिकाधिक रुप से सूचना के रचनात्मक व्यवस्था व वितरण पर निर्भर है । इसके कारण व्यापार और वाणिज्य में सूचना का महत्व अत्यधिक बढ़ गया है । वस्तुओं के उत्पादन पर आधारित परम्परागत अर्थव्यवस्था कमजोर पड़ती जा रही है और सूचना पर आधारित सेवा अर्थव्यवस्था निरन्तर बढ़ती जा रही है । धर्म, शिक्षा, स्वास्थ्य, व्यापार, प्रशासन, सरकार, उद्योग, अनुसंधान व विकास, संगठन, प्रचार आदि सब के क्षेत्रों में कायापलट हो गया है । आज का समाज सूचना समाज कहलाने लगा है ।

सूचना के महत्व के साथ सूचना की सूरक्षा का महत्व भी बढ़ेगा । सूचना प्रौद्योगिकी से जुड़े कार्यों में रोजगार के अवसर बढ़ेंगे । विशेष रुप से सूचना सुरक्षा एवं सर्वर के विशेषज्ञों की मांग बढ़ेगी । अमरीका में 12 अधिव्याख्याता की नियुक्ति इंटरनेट के माध्यम से हो गई । नौकरी हेतु साक्षात्कार के लिए अब विदेश जाने की आवश्यकता नही है, घर बैठे नौकरी आवेदन, लिखित परीक्षा, मौखिक परीक्षा और नियुक्ति आदेश प्राप्त होते विदेशी रोजगार मिल सकते हैं ।

भारत में सूचना प्रौद्योगिकी के महत्वपूर्ण पहल –

- रेलवे टिकट एवं आरक्षण का कम्प्यूटरीकरण
- बैंकों का कम्प्यूटरीकरण एवं एटीएम की सुविधा
- इंटरनेट से रेल टिकट, हवाई टिकट का आरक्षण
- इंटरनेट से एफआईआर
- न्यायालयों के निर्णय आनलाईन उपलब्ध कराये जा रहे हैं ।
- किसानों के भूमि रिकार्डों का कम्प्यूटरीकरण
- इंजीनियरिंग में प्रवेश के लिए ऑनलाईन आवेदन एवं ऑनलाईन काउंसिलिंग
- ऑनलाईन परीक्षाएँ
- कई विभागों के टेंडर ऑनलाईन भरे जा रहे हैं ।
- पासपोर्ट, गाडी चलाने के लाइसेंस आदि भी ऑनलाईन भरे जा रहे हैं ।
- कई विभागो के कांफिडेंसियल रिपोर्ट ऑनलाईन उपलब्ध है । (सूचना का अधिकार के तहत भी बहुत सी जानकारी दी जा रही है ।)
- चुनाव वोटिंग के लिए ऑनलाईन सुविधा
- महाविद्यालय, विश्वविद्यालय परीक्षाफल या पेपर ऑनलाईन
- आयकर की फाइलिंग ऑनलाईन की जा सकती है ।

इस इंटरनेट के विश्वव्यापी जाल ने सारे संसार को एक-दुसरे से बांध दिया है । भारत के लिए बहुत अच्छी खबर है और बुरी भी । अच्छी इसलिए कि भारतीय प्रतिभाओं की नित नई खोज से विकसित सॉफ्टवेअर और कम्प्यूटर सेवा उद्योग से भारतीय अर्थव्यवस्था के समृद्धशाली संसाधनों और उनसे आय के स्त्रातों में तेजी से बढ़ोत्तरी सामने आ रही है । बुरी खबर इसलिए है कि जिन प्रतिभाओं भारत को लाभ उठाना था, वे दूसरों की प्रगति का जरिया बन रही है । भारत में जिस

तरह से कुछ राजनीतिक दल फिर से आरक्षण-आरक्षण की रट लगा रहे हैं, उससे भारतीय प्रतिभाओं का पलायन रोका जाना संभव नहीं हो सकेगा । देवनागरी लिपि विश्व की एक नंबर की लिपि अमरिका में इसे लेकर संशोधन करनेवाले शोध छात्र भारतीय है, यह बड़ी खेद की बात है । भारतीय आईटी उद्योग सही मायने में देश का पहला वैश्विक व्यवसाय बनने की दिशा में बढ़ रहा है । ब्रिटेन में प्रमुख कम्प्यूटर प्रदाता कंपनी के रुप में भारत की टाटा कंसलटेंसी को ही ले लीजिए । जिसने इस क्षेत्र में बड़ा नाम कमाया है । सूचना प्रौद्योगिकी के लचीले व्यावसायिक नियमों के कारण आज कई कंपनीयाँ ज्यादा कुशलतापूर्वक अपना काम कर रही है । पिछले कुछ वर्षों के दौरान भारतीय प्रतिभाओं की भारी मांग ने भारत को एशिया प्रशांत क्षेत्र में सबसे तेज गति से विकास करनेवाला सूचना प्रौद्योगिकी बाजार बना दिया है ।

सूचना सुरक्षा के क्षेत्र में भारत का रिकार्ड अधिकांश देशों से बेहतर माना जा रहा है । भारत के प्राधिकारी देश में सूचना सुरक्षा के परिवेश को और मजबूत करने पर गहन रुप से बल दे रहे हैं । इस दिशा में किये जा रहे प्रयासों में सूचना प्रौद्योगिकी अधिनियम में संशोधन, समीक्षा, उद्योगों के प्रबंध वर्गों के बीच आपसी संपर्क में वृद्धि के बारे में जागरुकता बढ़ाई जा रही है । एक अधिकृत रिपोर्ट के अनुसार भारत की बड़ी कंपनियों ने पाँच सौ से ज्यादा गुणवत्ता प्रमाण-पत्र प्राप्त किये हैं जो विश्व के किसी भी देश से अधिक हैं । दूर संचार, विद्युत निर्माण कार्य, सुविधा प्रबंध, सूचना प्रोद्योगिकी, परिवहन, खानपान और अन्य सेवाओं सहित टेंडरों पर इसका असर दिखाई देने लगा है । साधारण जनता की मूलभूत जरुरतों को पूरा करने के लिए ऐसी सेवाओं के लिए कम लागत पर कुशलता, पारदर्शिता और विश्वसनीयता सुनिश्चित होनी जरुरी है ।

निष्कर्ष: हिन्दी भाषा में सूचना और प्रौद्योगिकी क्षेत्र में अपना एक अस्तित्व निर्माण किया है । अब वह आत्मनिर्भर बन गई है । हिन्दी भारतीय संस्कृति की सच्ची संवाहिका बन गई है । हम केवल भाषा नही सिखते तो उसकी संस्कृति का भी अनुकरण करते है । इसका अच्छा उदाहरण अंग्रेजी भाषा है । हमने रोजमर्रा के जीवन में अंग्रेजदा अधिकारी बनकर जीवन जी रहे है । उसे त्यागकर हमें भारतीय संस्कृति को प्रेरित और पोशित करनेवाली हिन्दी भाषा को सूचना और प्रोद्योगिकी के क्षेत्र में प्रयुक्त करने की आवश्यकता है ।

* राष्ट्रीय व्यवहार में हिंदी को काम में लाना देश की एकता व उन्नति के लिए आवश्यक है ।

  - महात्मा गांधी

* राष्ट्रीय भाषा का अनादर राष्ट्रीय आत्महत्या है।

  - महात्मा गांधी

अमीर खुसरों : हिंदी और हिंदुस्तान का गौरव !

संकलन
श्री. संदेश तोडणकर
कोंकण रेल्वे

आज से लगभग 500-600 साल पहले जब भारत में संस्कृत भाषा पाली, प्राकृत और अपभ्रंम में बट चुकी थी और उनसे भारत के अलग-अलग क्षेत्रों आधुनिक भारतीय भाषाओं जैसे पंजाबी, गुजराती, बंगला, असमिया, मराठी, कन्नड, तेलुगु, मलयालम, सिंधी आदि अपना स्वरुप ग्रहण कर रही थी ठीक तभी आधुनिक हिंदी (खड़ी बोली) भी अपना आधुनिक रुप ग्रहण कर रही थी । उस समय दिल्ली, जो भारत की राजधानी थी, खड़ी बोली उसी के पास मेरठ की भाषा थी । इस भाषा में शुरु से ही यह गुण मौजूद था कि इसके वाक्यों में दूसरी भाषाओं के शब्दों का प्रयोग करने पर भी इसके व्याकरण पर कोई असर नहीं पड़ता था, इसीलिए मुस्लिम शासकों के सैनिक जो पूरे भारत में कहीं भी आते-जाते थे, उन्होंने इसी भाषा में अरबी-फारसी के शब्दों का प्रयोग कर इसे व्यापक जन-संचार की भाषा बना दिया । दूसरा योगदान सूफी संतों का भी रहा क्यों कि उनका अभिमान भी भारत के अलग-अलग प्रांतों के संतों जैसा ही था इसे दक्षिण भारत के कई इलाकों में भी यह भाषा बे रोक-टोक पहुंची । इसी को आगे उर्दू का नाम भी दिया गया जो अरबी-फारसी से कही आसान थी और आम आदमी की समझ से भी बाहर नहीं थी । बस मुस्लिम इसे अपनी अरबी-फारसी की लिपि में लिखते थे और उत्तर भारत के लोग देवनागरी लिपि में ।

यह वह समय था जब किसी ने सोचा भी न था कि यही भाषी एक दिन पूरे भारत की संपर्क राष्ट्रभाषा बनेगी । उस समय इस हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए कोई सरकारी महकमा या 'हिंदी अधिकारी' नहीं थे पर ऐसे लोग जरुर थे जिन्हें इस भाषा पर गर्व था और उनमें अमीर खुसरो पहले व्यक्ति थे । एक स्थान पर उन्होंने लिखा है -

'तुर्क हिन्दुस्तानियम मन हिंदवी गोयम जबाब' अर्थात मैं हिंदुस्तानी तुर्क हूं और हिंदवी में जबाब देता हूं । एक अन्य स्थान पर भी 'हिंदवी' के प्रति उनका गर्व उभर कर सामने आता है । 'मैं हिंदुस्तान की तूती हूं । अगर तुम वास्तव में मुझसे जानना चाहते हो तो हिंदवी में पूछो, मैं तुम्हें अनुपम बातें बता सकूंगा । 'नुह सिपहर' में तो उन्होंने संस्कृत को फारी से भी बढ़-चढ़ कर माना है -

वींस्त जबानी ब सिफते दरदरी
कमतरज अरबी ब बेहतरज़ दरी ।

यह बात आज से 600-700 साल पहले की है जब-जब अपने घरें के लिए अपनी-अपनी मातृभाषा और पूरे भारत में संपर्क के लिए 'हिंदवी' को संपर्क भाषा के रुप में बिना किसी विवाद के स्वीकार कर लिया गया था । ये अमीर खुसरो वही कवि है जिनकी पहेलियां, निस्बतें, मुकरियां हमने बचपन में पढ़ी हैं -

1) एक थाल मोती भरा,
सबसे सिर औंधा धरा

2) पंडित क्यों न नहाया,
धोबिन क्यों मारी गई (धोती न थी)

3) बीसों का सिर काट लिया
ण मारा न खुन किया (नाखून)

'न लफ्जे हिंदवीस्त अज फारसी कम'
भाला था जब सबको भाया ।
खुसरो कह काम न आया ।
अर्थ करो नहिं छोड़ो गांव ।। (दिया)

अमीर खुसरो की हिंदवी के ये उदाहरण 1800 ई. के. आस-पास के हैं जो आज की हिंदी से मिलते-जुलते हैं ।

अमीर खुसरो का जन्म 1253-54 ई. में दिल्ली में माना

हिंदी दिवस समारोह की झलकियां...

आकाशवाणी,रत्नागिरी केन्द्र की ओर से हिंदी पखवाडे का आयोजन किया गया । संबोधित करते समय श्री. रविंद्र मंगळवेढेकर

दि न्यू इंडिया एश्योरन्स कं.लि. के मंडल कार्यालय से हिन्दी दिवस के सुअवसर पर हिन्दी में कामकाज करने का संकल्प लिया।

हिन्दी दिवस समारोह, बैंक ऑफ महाराष्ट्र आंचलिक कार्यालय रत्नागिरी.
प्रस्तावना करते हुए – श्री.सुहास केणी, राजभाषा संपर्क अधिकारी
साथ में आंचलिक प्रबंधक : श्री.विजय श्रीवास्तव
उप आंचलिक प्रबंधक : श्री.सुहास चौगुले

हिंदी दिवस समारोह की झलकियां...

भारत संचार निगम लिमिटेड, रत्नागिरी

कोंकण रेल्वे

हिन्दी शब्द अनुसंधान प्रतियोगिता आयोजन
भारत संचार निगम लिमिटेड, रत्नागिरी

हिंदी दिवस समारोह की झलकियां...

बैंक ऑफ इंडिया आंचलिक कार्यालय

समुद्री उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण, रत्नागिरी

बैंक ऑफ़ इंडिया आंचलिक कार्यालय के ओर से 'बैंकिंग लेखा परीक्षापर' संगोष्ठी का आयोजन

कोर कमेटी सदस्य

श्री.सतीश रानडे
न्यू इंडिया एश्योरन्स कं.

श्री.जनार्दन शिंदे
कोंकण रेल्वे

श्री.पुरूषोत्तम डोंगरे
आकाशवाणी

श्री.लक्ष्मीकांत भाटकर
सीमा शुल्क कार्यालय

श्री.गजानन करमरकर
डाक कार्यालय

जाता है । इनका असली नाम 'अबुल हसन' था किंतु जलालुद्दीन खिलजी ने इनकी कविता से खुश होकर इन्हें 'अमीर' का किताब दिया था तभी से इन्हें 'मल्लिक्कुशोअरा अमीर खुसरो' कहा जाने लगा । इनके पिता सैफुद्दीन महमूद तुर्कीस्तान के लाचीन कबीले के सरदार थे जो मुगलों के अत्याचार से तंग आकर भारत आ गए थे। इतकी मां हिंदु परिवार से थीं । आज जहां दिल्ली में हजरत निजामुद्दीन स्टेशन है, उसके पास ही इनके धार्मिक गुरु हजरत निजामुद्दीन औलिया की दरगाह है जो एक सूफीसंत थे ।

अपने जीवन काल में अमीर खुसरो ने कई नात, कव्वालियों की रचना की, इन्हें कव्वाली का जनक भी माना जाता है । इन्होंने सितार और तबले का भी अविष्कार किया । इनकी कविता का उदाहरण यह नाद है जो आज भी पंकज उधास जैसे गायकों द्वारा गाई जाती है । और एक फिल्म में भी इसे फिल्माया गया है –

छापा तिलक तज दीन्हीं रे तो से मैना मिला के...

प्रेम बटी का मदवा पिला के,

मतवारी कर दीन्हीं रे मो से नैना मिला के

खुसरो निजाम पै बलि–बलि जाए

मोहे सुहागन कीन्हीं रे मोसे नैना मिला के ।

ऐसा था सम्मान हिंदी का जिसके बल पर अमीर खुसरो भारत में ही नहीं, अरब, फारस, तुर्कीस्तान, उज्बेकिस्तान और पाकिस्तान में आज पूजे जाते हैं। दुनिया भर के सभी कव्वाल उन्हें अपना गुरु मानते हैं।

राष्ट्रभाषा

बहुतों की मातृभाषा जो है,
जो है संपर्क की भाषा,
जो है कामकाज की भाषा,
वह है हिंदी भाषा ।

हिंदी भाषा है न्यारी,
सुलभती से है सबको प्यारी,
जिसका किया संविधान ने सम्मान,
वह है हमें राजभाषा प्रमाण ।

पूरे भारत में बोलने वाली,
देन करने वाली-सामाजिक सांस्कृतिक लेन,
सभी राज्यों में एकता रखने वाली,
वह है हिंदी राष्ट्रभाषा हमारी ।

सदानंद चितले
राजभाषा विभाग

* हिंदी हिमालय से लेकर कन्याकुमारी तक व्यवहार में आनेवाली भाषा है ।

– राहूल सांकृत्यायन

क्रोध का प्रबंधन: उन्नति और खुशहाली का मंत्र

श्री. जनार्दन शिंदे
कोंकण रेल्वे

क्रोध एक संक्रामक बीमारी है । हर व्यक्ति के जीवन में काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार स्वाभाविक वृत्तीयां हैं । दरअसल इन सभी के मूल में तो 'अहंकार' यानी अपने होने की भावना अर्थात् 'मैं' हूं ही होता है किन्तु इन वृत्तियों में से 'क्रोध' एक ऐसी वृत्ति है जो केवल एक व्यक्ति तक ही सीमित नहीं होती बल्कि यह संक्रामक बीमारी की तरह फैलती है और जो भी इसकी चपेट में आता जाता है, वह भस्म हो कर रह जाता है । इस बीमारी के इलाज के लिए अभी तक कोई दवा नहीं बनी है क्योंकि यह शारीरिक बीमारी न हो कर एक विद्रूप मनोदशा और मनोग्रंथि है । प्राय: क्रोध का कारण अज्ञान ही होता है किंतु तब तक तो सब कुछ खत्म हो चुका होता है । सालों के रिश्ते-नाते एक ही पल में टूट जाते हैं, बड़ी-बड़ी सलतनत उजड़ जाती हैं । इसीलिए शास्त्रों में भी 'क्रोध' को सबसे बड़ा शत्रु बताया गया है - जिसका एक ही जबाब है - क्षमा !

क्षमा गुणवंत बलम् - विदुरनीति

हमारे जीवन में ऐसा आम तौर पर होता है कि जब हम पर कोई क्रोधित होता है या हम किसी पर क्रोधित होते हैं तो दोनों ही व्यक्ति जहां-जहां जाते हैं और जिस-जिस व्यक्ति से मिलते हैं-वहां उनके साथ व गुस्सा भी दूसरे लोगों तक पहुंचता है और इस तरह एक आद्मी का गुस्सा कई लोगों को गुस्से की अंधी खाई में डाल देता है । यह एक 'निष्क्रियता' की स्थिति है जिससे किसी का भी भला नहीं होता । इस तरह क्रोध से हर हालत में दूर रहना ही श्रेयस्कर साबित होता है ।

किसी भी व्यक्ति, घर, समाज और संगठन के लिए यह जरुरी है कि वह क्रोध प्रबंधन के मूल्यों को भी अपनाए और उन्हें निरंतर पोषित भी करे जो खुशहाली, शांति, समृद्धि, गतिशीतलता और स्थायित्व का मूल-मंत्र है क्योंकि - मूढानामेव भवति क्रोधो ज्ञानवतां कुत: । - विष्णु पुराण

'मुर्खों को ही क्रोध आता है, ज्ञानियों को कभी नहीं, लेकिन इस मायावी शत्रु का दमन करने के लिए ऋग्वेद का छोटा सा ही मंत्र काफी है -'

- ते हेलो वरुण नमोमि: अर्थात् क्रोध को हमेशा नम्रता से ही शांत करा जाए । हिंदू, बौद्ध और जैन धर्म में क्रोध को एक प्रकार की जीव हिंसा ही माना गया है क्योंकि क्रोध में यदि किसी के शरीर पर आघात किया गया जाता है तो शरीर के वे घाव तो जल्दी भर जाते हैं पर क्रोध में यदि किसी को अपमानपूर्ण शब्द कहे जाते हैं तो वे जीवन भर नहीं भूल जा सकते । इसीलिए नीति कहती है -

'ऐसा बानी बोलिए, मन का आया खोय,
ओर न को सीतल करे, खुद भी सीतल होय ।'

चाणक्य सूत्र में भी कहा गया है -

'जिह्वायत्तौ वृद्धि विनाशौ' अर्थात् अपनी उन्नति अवनति अपनी वाणी के ही अधीन है ।

* अंग्रेजी में स्वतंत्र देश की गाड़ी चले इससे बड़ा दुर्भाग्य क्या हो सकता है ।
- महात्मा गांधी

क्या सत्य निष्ठा सदैव फलीभूत होती है ?

सीताराम दुबे
राजभाषा विभाग,
कोंकण रेल्वे

करना है श्रृंगार आत्मा का तो एक निष्ठ बनो,
ईमानदारी निष्ठ बनो-पारदर्शिता से सत्य !

सत्यनिष्ठता का आज भी पूरी दुनिया में सम्मान और एक विशिष्ट स्थान है जिसकी शिक्षा बूढे-लकड़हारे की कहानी से दी जाती है । जब उसकी कुल्हाड़ी पानी में गिर गई थी तब पानी की देवीने उसे सोनी, चांदी और लोहे की कुल्हाड़ी दिखाई तो उसने ईमानदारी से अपनी लोहे की कुल्हाड़ी को वापस लिया ।

सत्यनिष्ठता मानव जाति के विकास में वह अमूल्य गुण है जिसे ईश्वर का सर्वोत्तम उपहार समझा जाता है । प्रत्येक व्यक्ति के अंत:मन में सत्यनिष्ठा अवश्य है और जब वह कोई अनुचित कार्य करता है तो उसे उसकी आत्म ग्लानि भी अवश्य होती है । सत्यनिष्ठा के बिना जीवन में कहीं भी शांति और संतोष नहीं लाया जा सकता है । सत्यनिष्ठा वह धन है जिसके बिना बड़े से बड़ा मनुष्य भी दरिद्र है किंतु सत्यनिष्ठता से रहने वाले सभी लोगों को आम तौर पर अपने पूरे जीवन में संघर्ष शील रहते ही देखा है । निष्ठा जाए सत्य कैसा । सुख और क्यों अपनाई, शांति कैसी ?

ये सभी वे यश प्रश्न हैं जो आदमी की अस्मिता को हमेशा घेरे रहते हैं । वह सत्यनिष्ठ बनना तो चाहता है फिर भी बारबार अपने पथ से भटक जाता है । हालांकि हमारे शास्त्रो में कर्म करने की शिक्षा दी गई है उनके फल गिनने की नहीं, क्योंकि सत्कर्म कभी व्यर्थ नहीं जाते हैं । हमेशा फलीभूत होते हैं किन्तु मानव मन आतुर रहता है और उन उपलब्धियों के पीछे भागता है जो आत्मा की निष्ठा एक दिव्य गुण है अधिक संसारिक हैं किंतु सत्य आवाज प्रकृति, ईश्वर का आदेश का अटल नियम है जो कतई सांसारिक नहीं है ।

सांसारिक प्रपंच रोज हमारी सत्यनिष्ठा की परीक्षा लेते हैं और हममें से अधिकतर लोग रोज इस परीक्षा में पिछड़ जाते हैं। बाईबिल की एक छोटी सी कहानी है कि इस दुनिया में अपनी मंजिल तक पहुंचनेके दो रास्ते हैं । सुथरा लेकिन लम्बा रास्ता - एक साफ, दसरा रास्ता छोटा है गंदा है पर अधिकतर लोग इसी रास्ते को अपनाते हैं । यही जीवन का सत्य है । बाईबिल की ही एक काहानी है, भेड़ों को जंगल में अके 99 भेड़ों में से एक भेड़ खो जाती है तो वह 100 जिसमें एक गड़रिया कीला छोड़कर एक भेड़ को ढुंढ़ने निकल जाता है । यह जीवन की सच्चाई है कि जो हमारे पास होता है उसका हमारे लिए कोई मूल्य नहीं होता ।

सत्यनिष्ठा ही वह प्राकृतिक नियम है जो मानव और पशुओं के बीच एक विभाजित रेखा खींचता है । मानव संस्कृति में वही अमल में लाता है जो सत्य-निष्ठा का उपासक होता है । आज हमारे बीच राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की पूरी दुनिया में अमरता इसी का साक्षात प्रमाण है । दुनिया में जितने भी लोगों ने सत्य का अन्वेषण किया है, निष्ठा का मार्ग अपनाया-सत्य है उन्होंने अग्नि परीक्षा तो जरुर दी लेकिन वह सभी के सभी उसमें सफल हुए हैं और उन्होंने आनेवाले युग का मार्ग प्रशस्त किया है ।

सत्यनिष्ठा एक ऐसा अलौकिक वरदान है जिससे हम दुनिया में ऐसा सब कुछ हासिल कर सकते हैं । निष्ठा का फल और क्या होगा जो इस दुनिया में मिल ही नहीं सकता । भला इससे अधिक सत्य और यदि यह फल भी न मिला तो भी परम शांति निष्ठा यही सत्य-चैन तो कहीं जाता नहीं-सुख, फल है जो कभी बेकार नहीं जाता है और असफल भी नहीं होता है । इस तरह हर किसी को अपने सत्यनिष्ठा के मार्ग पर ही चलने का प्रयास करना चाहिए । चाहे उसके जीवन में कितनी भी कठनाईयां क्यों न आए उसे उसका सामना करने से पीछे नहीं हटना चाहिए । इसी को सत्य निष्ठा कहते हैं ।

निष्फल नहीं जाती सत्य, निष्ठा कभी भी
पूरे होते प्रण जिंदगी बनती किसी ऋषी सी,
ईमानदारी आती है, और दपारदर्शिता भी,
बनता है जीवन स्वर्ग मिलती शांति आत्मा की ।

राजभाषा नीति के कार्यान्वयन हेतु 2014-15 के लिए महत्वपूर्ण निर्धारित लक्ष्य

मूल पत्राचार

क क्षेत्र
क क्षेत्र से क क्षेत्र को 100 %
क क्षेत्र से ख क्षेत्र को 100 %
क क्षेत्र से ग क्षेत्र को 65 %
क क्षेत्र से क व ख क्षेत्र के राज्य / संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय / व्यक्ति 100 %

ख क्षेत्र
ख क्षेत्र से क क्षेत्र को 90 %
ख क्षेत्र से ख क्षेत्र को 90 %
ख क्षेत्र से ग क्षेत्र को 55 %
ख क्षेत्र से क व ख क्षेत्र के राज्य / संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय / व्यक्ति 100 %

ग क्षेत्र
ग क्षेत्र से क क्षेत्र को 55 %
ग क्षेत्र से ख क्षेत्र को 55 %
ग क्षेत्र से ग क्षेत्र को 55 %
ग क्षेत्र से क व ख क्षेत्र के राज्य / संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय / व्यक्ति 85 %

हिंदी में टिप्पण
क – 75 %
ख – 50 %
ग – 30 %

हिंदी में प्राप्त पत्रों का उत्तर हिंदी में दिया जाना
क ख ग के लिए
100 %

राजभाषा मॉडल - २

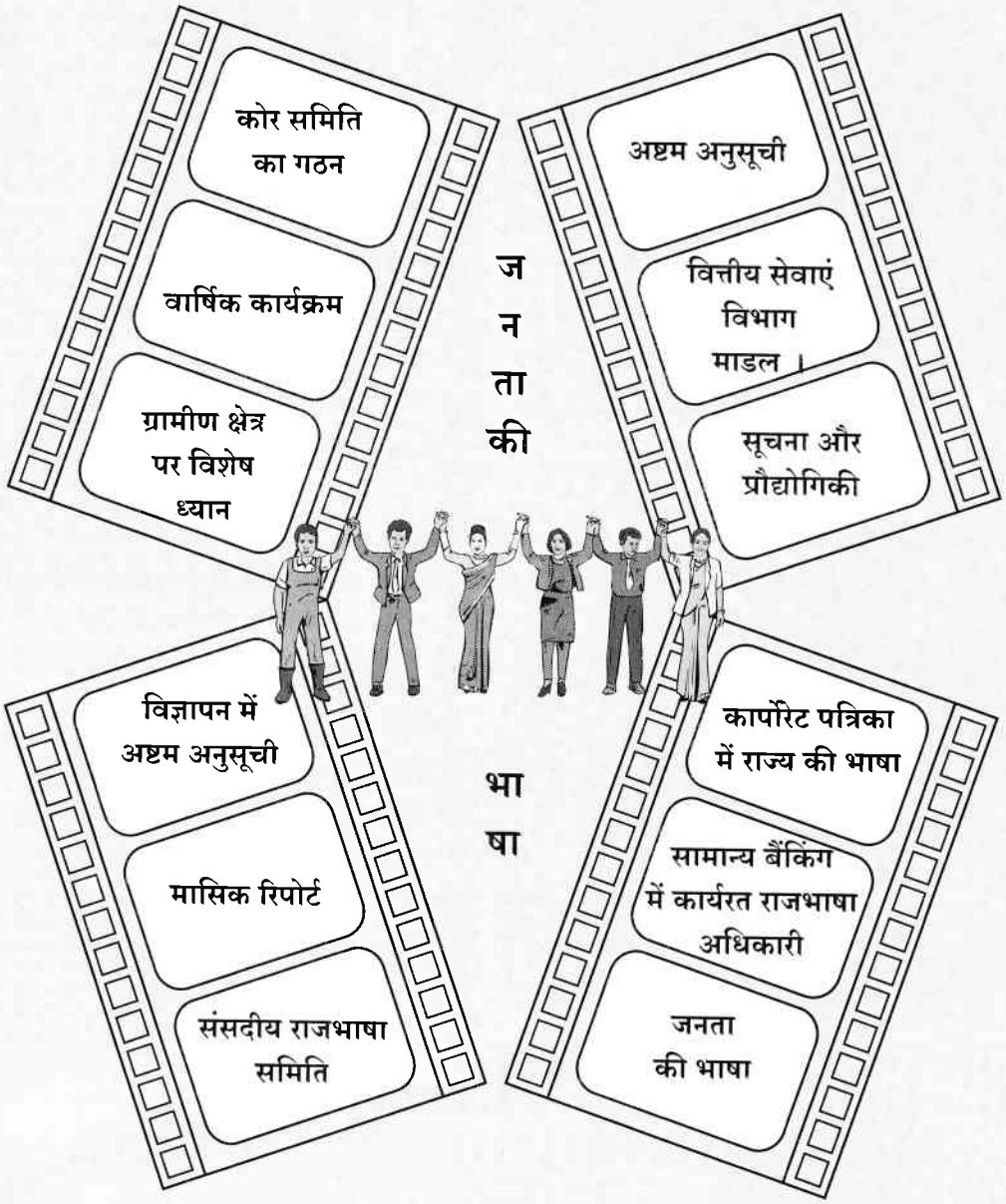
कोर समिति का गठन
वार्षिक कार्यक्रम
ग्रामीण क्षेत्र पर विशेष ध्यान
अष्टम अनुसूची
वित्तीय सेवाएं विभाग माडल I
सूचना और प्रौद्योगिकी
जनता की
भाषा
विज्ञापन में अष्टम अनुसूची
मासिक रिपोर्ट
संसदीय राजभाषा समिति
कार्पोरेट पत्रिका में राज्य की भाषा
सामान्य बैंकिंग में कार्यरत राजभाषा अधिकारी
जनता की भाषा

राजभाषा मॉडल - २

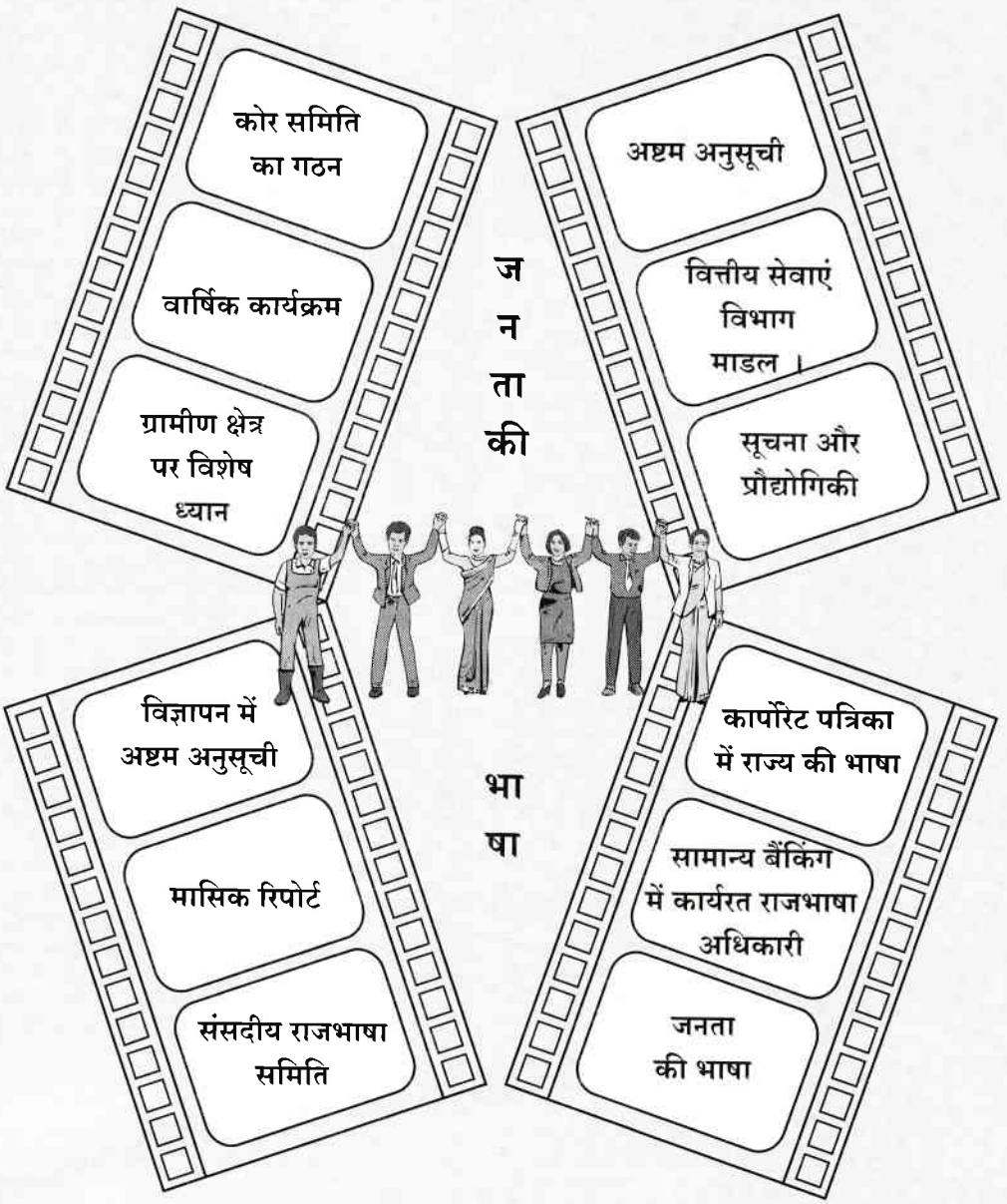
कोर समिति का गठन
वार्षिक कार्यक्रम
ग्रामीण क्षेत्र पर विशेष ध्यान
अष्टम अनुसूची
वित्तीय सेवाएं विभाग माडल ।
सूचना और प्रौद्योगिकी
ज न ता की
भा षा
विज्ञापन में अष्टम अनुसूची
मासिक रिपोर्ट
संसदीय राजभाषा समिति
कार्पोरेट पत्रिका में राज्य की भाषा
सामान्य बैंकिंग में कार्यरत राजभाषा अधिकारी
जनता की भाषा

राजभाषा मॉडल 2

बैंकिंग कार्यप्रणाली - हिन्दी, भारतीय भाषाओं का प्रयोग - प्रभावी ग्राहक सेवा, लाभप्रदता

1.	बैंको के प्रधान कार्यालय और समस्त प्रशासनिक कार्यालयों तथा शाखाओं में समाजोन्मुखी बैंकिंग एवं लाभप्रदता संबंधी बैंकिंग कोर समिति का गठन ।	यह कोर समिति केवल ग्राहक सेवा से जुड़े राजभाषा कार्यान्यवन विषयक मुद्दों पर कार्रवाई करेगी । इस कोर समिति में निम्नलिखित विभागों को सदस्य बनाया जा सकता है । सूचना एवं प्रौद्योगिकी विभाग, विज्ञापन एवं जनसम्पर्क विभाग, विपणन विभाग, कृषि विभाग, वित्तीय समावेशन विभाग, कार्ड विभाग, ग्राहक सेवा विभाग, राजभाषा विभाग । बैंक विशेष की आवश्यकतानुसार और विभागों को सम्मिलित किया जा सकता है । राजभाषा कार्यान्यवन समिति राजभाषा की एक शीर्ष समिति है । जिसके अंतर्गत कोरसमिति की समीक्षा की जाएगी । इस संबंध में कार्ययोजना प्रधान कार्यालय के राजभाषा विभाग द्वारा प्रदान की जाएगी ।
2.	संविधान की अष्टम अनुसूची में विनिर्दिष्ट भाषाओं का बैंकिंग परिचालन व कार्यप्रणाली में सहयोग ।	राजभाषा हिन्दी के अतिरिक्त अष्टम सूची में विनिर्दिष्ट भाषाओं में भी ग्राहक को पत्र, विज्ञापन, ग्राहक उपयोगी सूचनाएँ, आई.टी. उत्पाद, बैंकिंग के कागजात जैसे पास बुक आदि प्रदान करने की व्यवस्था बनाकर कार्यान्वयन सुनिश्चित किया जाए ।
3.	वार्षिक कार्यक्रम	इस मॉडल का केंद्रीय लक्ष्य संघ की राजभाषा नीति के अतिरिक्त भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग का वार्षिक कार्यक्रम भी है ।
4.	वित्तीय सेवाएँ विभाग का मॉडल - 1	वित्तीय सेवाएँ विभाग का मॉडल-1 राजभाषा प्रयोग, - आपसी संवाद - सार्थक दिशा, राजभाषा कार्यान्यवन के प्रथम चरण को पूर्ण करने की सभी विशिष्टताओं से परिपूर्ण है । इस मॉडल को सफलतापूर्वक लागू करने के लिए वित्तीय सेवाएँ विभाग के मॉडल 1 को पूरी तरह लागू करना अनिवार्य है ।
5.	ग्रामीण क्षेत्रों पर विशेष ध्यान	भाषा विषयक चेतना ग्रामीण क्षेत्रों में विशेष नहीं है इसलिए भाषा विषयक मांग प्राय: महानगरों और नगरों से उठती है । इस मॉडल में ग्रामीण ग्राहकों और जनता की भाषा में संवाद और लेखन पर बल दिया जाना आवश्यक है ताकि ग्राहक बैंकिंग उत्पादों को समझ सकें और उनका लाभ उठा सकें । ग्रामीण युवक-युवतियों, महिलाओं, बुजुर्गों, विद्यार्थियों, और ग्राम पंचायतों के स्तर पर बैंकिंग उत्पादों की जानकारी देने के लिए विशेष जागरुकता कार्यक्रम का आयोजन उन्हीं की भाषा में किया जाना आवश्यक है । इस प्रकार के आयोजन प्रतिमास विशेष तौर से महिला ग्राहकों /निरक्षर महिला ग्राहकों के मध्य आयोजित किए जाएँ । बैंक को जनसम्पर्क के माध्यम से विशेष भूमिका निभानी पड़ेगी ताकि वे बैंकों से जुड सकें । इस संबंध में पुस्तिका, एनीमेशन, विज्ञापन, प्रचार प्रसार के माध्यम से कार्य किया जाना चाहिए ।

6.	सूचना और प्रौद्योगिकी पर विशेष ध्यान	हिन्दी और अंग्रेजी भाषा के अतिरिक्त अष्टम अनुसूची की अन्य भाषाओं में बैंकिंग कामकाज के लिए आई. टी. में संभावनाएँ तलाश कर उसे लागू करना । वैबसाइट में हिन्दी और अंग्रेजी के अतिरिक्त जिस राज्य में बैंक का प्रधान कार्यालय हो उस राज्य की भाषा में भी वैबसाइट उपलब्धता प्रदान की जा सकती है । एटीएम, मोबाइल बैंकिंग, नेट बैंकिंग में हिन्दी और क्षेत्रीय भाषाओं का उपयोग सुनिश्चित किया जा सकता है ।
7.	विज्ञापन में अष्टम अनुसूची की भाषाएँ	हिन्दी और अंग्रेजी के अतिरिक्त अष्टम अनुसूची की भाषाओं में भी विज्ञापन, बैनर, पोस्टर आदि तैयार कर वितरित किए जाएँ ।
8.	कार्पोरेट पत्रिका में राजकीय भाषा	प्रत्येक राष्ट्रीयकृत बैंक के प्रधान कार्यालय द्वारा द्विभाषिक कार्पोरेट पत्रिका प्रकाशित की जाती है । इसी प्रकार इसे बैंकों के अन्य प्रशासनिक कार्यालयों द्वारा हिन्दी पत्रिका प्रकाशित की जाती है जिसमें राज्य की राजकीय भाषा के लिए भी कुछ पृष्ठ निर्धारित किए जा सकते हैं ।
9.	मासिक रिपोर्टिंग	बैंक के प्रशासनिक ढांचे के अनुरुप प्रशासनिक कार्यालय के राजभाषा अधिकारी अपने वरिष्ठ प्रशासनिक कार्यालय को उक्त विषयक प्रगति, कठिनाईयों, सुझावों आदि की जानकारी प्रति माह प्रेषित करें । इस प्रकार प्रधान कार्यालय तक पहुंची इस मासिक रिपोर्ट की समीक्षा कोर समिति करेगी और तदनुसार कार्यान्यवन की योजनाएँ बनाकर उसे लागू करेगी ।
10.	सामान्य बैंकिंग में कार्यरत विशेषज्ञ राजभाषा अधिकारी	ऐसे विशेषज्ञ राजभाषा अधिकारी जो सामान्य बैंकिंग अधिकारी के रुप में कार्यरत हैं । उनका सहयोग प्राप्त कर बैंकिंग में और प्रभावी ढंग से राजभाषा का कार्यान्वयन किया जाये । इस प्रकार के अधिकारी बैंकिंग में राजभाषा विषयक प्रगति, कठिनाईयों को दूर करने विषयक सुझाव आदि बेहतर ढंग से कर सकते हैं । तथा अपने कार्यक्षेत्र में राजभाषा नियमों को पूर्णरुप से लागू कर सकते हैं । इस संबंध में समस्त ऐसे अधिकारियों को अपने कार्यक्षेत्र में प्रभावी राजभाषा कार्यान्यवन सुनिश्चित करना है ।
11.	संसदीय राजभाषा कार्यान्यवन समिति	विगत पाँच वर्षों में राजभाषा संसदीय समिति के निरीक्षणों पर कार्रवाई अपेक्षित है । इस संबंध में समीक्षा की जाए ।

नाते तुझे नी माझे

महेंद्र विनायक पाटणकर
दुरदर्शन उच्चशक्ति सहक्षेपण केंद्र, रत्नागिरी

नाते तुझे नी माझे
नाते युगायुगांचे

नातं, फक्त दोन अक्षरी शब्द. पण या दोन अक्षरांमध्ये एवढी ताकद आहे की त्या काव्यात्म पण ताकदवान शब्दातून माणसं माणसांशी, पशूपक्षी निसर्गाशी, दोन घरं एकमेकांशी, दोन प्रदेश भूमातेशी, दोन देश एकमेकांशी, सारं जग प्रत्येकाशी, तर प्रत्येक सजीव साऱ्या जगाशी जोडले जातात. नात्यांमध्ये असणारा भावभावनांचा बंध एकमेकांच्या मनाचा ठाव घेतो. दोन हृदय एकमेकांशी कधी आणि कशी जोडली जातात ते समजतही नाही. माझ्या नजरेतून नातं - एक भावना अशी दिसते की माणसाच्या अथवा प्रत्येकाच्या हृदयपटलावर उमटलेलं ते एक इंद्रधनुष्यच आहे कारण या नात्याप्रमाणेच गगनपटावर उमटणारं इंद्रधनुष्य कधी आणि कसं अवतीर्ण होतं ते समजत नाही. नात्यातील भावना आणि त्याचे सूर कधी आणि कसे जुळतात तेच समजत नाही. खरं म्हणजे नात्याला कोणत्याही प्रकारची नावाची जोड देण्याची आवश्यकताच नाही कारण माझ्या मते नातं जुळणं ही एक अनुभूती आहे. ती एक काल्पनिक शक्ति आहे की जीचं तयार होणं दिसत नाही, परंतु तिच्यात एकात्मतेची एकरुपतेची घट्ट वीण असते. आईचं-मुलाशी, भावाचं-बहिणीशी, पत्नीचं-पतिशी, मित्राचं-मैत्रिणीशी, गुरुचं-शिष्याशी असणारी ही नाती केवळ माणसांनी माणसांशी माणसांसाठी तयार केलेली फक्त नात्यांची नावं आहेत. परंतु या सर्वांपेक्षा खूप आत खूप खोल ज्याच्या अस्तित्वाचा ठाव लागत नाही तिथून ही सारी नाती सुरु होतात.

घर असावे घरासारखे नकोत नुसत्या भिंती
त्यात असावा प्रेम जिव्हाळा नकोत नुसती नाती

या दोन ओळींमध्ये खूप आणि सखोल भावार्थ आहे. ''अहो! नात्यांची फक्त नावं घेऊन वावरणाऱ्यांमध्ये नात्यातील भावना असेल का ? अहो ! त्यांच्याठायी फक्त निर्जीवता असेल ! पण प्रेम, जिव्हाळा, ममता ज्यांच्या रोमारोमात आहे तिथे फक्त घराच्या भिंती नसतात तर त्या घराच्या कणांकणांत असतं ते नातं असतं. नात्याचं दुसरं हळुवार रुप म्हणजे ऋणानुबंध.''

'ऋणानुबंध' खरच किती हळुवार शब्द ! प्राजक्ताच्या झाडावरुन ओघळणाऱ्या फुलातील अलगदता या शब्दात परीपूर्ण भरलेली आहे. या शब्दात प्रामाणिकपणा, निर्मळता, निरागसता ओतप्रोत आहे. माझं तर असं मत आहे, की फक्त सजीवांपुरतीचे ऋणानुबंधाची अथवा नात्याची ही वीण नाही तर या पृथ्वीतलावरील प्रत्येक कणाकणाची एकमेकांशी बांधलेली ही रेशीम गाठ आहे. अहो ! जेव्हा एखादी जागा, एखादं घर किंवा एखादी वस्तू सोडून आपण जातो तेव्हा एकदातरी आपण मागे वळून बघतो, ज्याप्रमाणे सासरी निघालेली नववधू एकदा तरी माहेराकडे वळून बघते. हे मागे वळून बघणं म्हणजेच नातं.

मी तर समुद्रकिनारी तासन्तास बसतो. त्यावेळी माझ्या दिशेने येणाऱ्या लाटा माझ्याशी गुंज करतात आणि तेव्हा मी म्हणतो 'हे लाटांनो, तुमचंही माझ्याशी नातं आहे बरं कां !' रणरणत्या उन्हातून अनेक मैल चालताना जेव्हा एखादा वृक्ष दिसतो आणि त्याच्या सावलीत आपण विराम करतो तेव्हा जणू काही आईच्या मायेच्या पंखाखाली आपण असल्याची जाणीव होते, मग त्यावेळी त्या वृक्षाचं आपल्याशी किती उच्चकोटीचं नातं जुळतं बरं !

ने मजशी ने परत मातृभूमीला
सागरा प्राण तळमळला ।

आपली आर्तता सागराशी बोलून दाखवणाऱ्या स्वातंत्र्यवीर सावरकरांचं सागराशी, मातृभूमीशी काय नातं होत, कसले ऋणानुबंध होते हे सांगण्याची गरजच नाही.

मला अनेकदा आठवण होते ती आमच्या घरातील गोठ्यातल्या गायीची. अनेक पीढ्यांपासून आमच्या घरात गाय असायची. आमच्या घरातील लहानांपासून थोरांपर्यंत

त्या गायीला सर्वजण आपल्या घरातील घटक मानत. पण ज्यावेळी आमच्या घरातील कर्ता स्वर्गवासी झाला त्यावेळी त्या गायीच्या डोळ्यातील अश्रू बघून मी देखील तिच्या गळ्याला मिठी मारुन माझ्या अश्रूंना वाट मोकळी करुन दिली होती. आणि त्यानंतर काही महिन्यांनीच आमची लाडकी गाय गतप्राण झाली. तेव्हा तर आम्ही सारे अक्षरश: हमसाहमशी रडलो होतो. आज या घटनेला अनेक वर्ष झाली आहेत. तरीही त्या गोठ्यात गेल्यावर माझं मन सद्गदीत होतं आणि डोळ्यांच्या कडा ओल्या होतात. हे खरं नातं.

दोन ओंडक्यांची होते सागरात भेट
एक लाट तोडी दोघा पुन्हा नाही भेट ।

या काव्यपंक्तीतून तर काही क्षणांची भेट सुद्धा घट्ट नात्याची असते हेच सिद्ध होतं. 'अहो! आपल्या आयुष्यात अशा कितीतरी व्यक्ती येतात की ज्या काही क्षणांपुरत्याच आपल्या बरोबर असतात आणि त्यानंतर त्या व्यक्ति आपल्या दृष्टीपटलावरुन निघून जातात त्या पुन्हा कधीच भेटत नाहीत. पण त्या काही क्षणातच आपण एकमेकांचे कायमचे मनाने जोडले जातो ते खरं नातं.'

एकदा एका बोटीतून काही प्रवासी प्रवास करत होते. समुद्रात आत गेल्यावर अचानक मोठं वादळ आलं. बोट भरकटू लागली. सर्व प्रवासी देवाचा धावा करीत होते. आणि प्रत्येकजण एकमेकांना घट्ट मिठ्या मारुन एकमेकांचं दु:ख हलकं करण्याचा प्रयत्न करीत होते. प्रत्येकाला समजत होतं की काही वेळाने आपला शेवट आहे. परिस्थिती फार बिकट होती. मरण समोर दिसत होतं आणि जगणं थोडच होतं. आणि अचानक काय चमत्कार झाला ईश्वरच जाणे, वादळ हळूहळू शमलं. बोट चालकाने बोट योग्य दिशेने नेली आणि सर्व प्रवासी सुखरुप किनाऱ्याला आले. आज अनेक वर्ष झाली. तरी ही घटना आठवली तरी अंगावर काटा उभा राहतो. त्यातील काही प्रवासी एकमेकांपासून खूप दूर, कायमचे दूर गेले ते आता कधीच एकमेकांना भेटत नाहीत, परंतु त्या संकटसमयीचे असलेले ऋणानुबंध आजही तसेच घट्ट आहेत. त्यातील प्रत्येक प्रवासी हेच म्हणत असेल आजही आपल्या सर्वांचं नातं अमर आहे.

असं हे नातं – आज मात्र हे नात्याचे बंध अनेकदा कमकुवत झाल्यासारखे वाटतात. सध्याच्या या धकाधकीच्या जीवनात प्रत्येकजण आपला स्वास्थ्य हरवतोय असं वाटतं. आज माणूसच माणसाला ज्या पद्धतीने संपवू पहात आहे ते तर खेदपूर्णच आहे. सकाळी सकाळीच वर्तमानपत्र उघडल्यावर डोळ्यासमोर बातमी असते... आईचा मुलाने खून केला, अति अपेयपानामुळे बापाने मुलाला गोळी घालून ठार केले, मित्राने आपल्या मित्राचे केवळ पैशासाठी अपहरण करुन ठार मारले, मित्राने आपल्या मैत्रिणीच्या चेहऱ्यावर ॲसिड फेकले, मानवी बॉम्बने अनेक निरपराध्यांचे बळी घेतले. या ना अशा अनेक बातम्या. प्रत्येक बातमीचा तोच तो नातं हरवलेला निर्दयी चेहरा. मग अशावेळी प्रश्न पडतो खरच आज नातं एकमेकांच असं काही शिल्लक आहे ? एका बाजूला आपण प्रगतिच्या दिशेने चंद्रावर पाऊल ठेवलय, मंगळ आपलासा करण्याचा आपण प्रयत्न करतोय. जर एवढे मैल दूरवर आपण ऋणानुबंध जोडतोय तर या पृथ्वीतलावर असणाऱ्या प्रत्येकाला असं म्हणायला आपण का विसरतोय की अरे ! तुमचं – आमचं नातं पहीलं आहे त्यानंतरच इतर ग्रहांशी आपलं नातं आहे ! मी मगाशी म्हटल्याप्रमाणे प्रत्येकाने पुन्हा मागे वळून पाहण्याची गरज आहे. कारण मागे वळून पाहिलं तर जे दिसेल ते नातं असेल.

विसरशील खास मला दृष्टीआड होता
वचनेही गोड गोड देशी जरी जाता

या काव्यपंक्तीतून दिसणारा स्वार्थनात्यातील खोटेपणा जेव्हा संपेल तेव्हा जे राहील ते अतुट नातं असेल. दृष्टीआड झाल्यावरच काय कधीच नातं सुटता नये, पाश तुटता नयेत.

माझ्या आयुष्यातील एक प्रसंग मला अजूनही आठवतो. आणि मनातील भावनांचा कल्लोळ होतो.

त्या दिवशी माझ्या ऑफीसमध्ये मी लवकरच आलो होतो. माझ्या टेबलासमोरील देवाच्या तसबीरीला मी नमस्कार करुन माझी बॅग ड्रॉवरमध्ये ठेऊन मी खूर्चीत बसलो. शिपायाने माझ्या डोक्यावरील पंखा सुरु केला. मला काय माहीत की यानंतर काही विचित्र प्रसंग घडणार आहे ! आमच्या ऑफीसच्या बाहेरील बाजूला चिमणीचं एक

छोटसं घरटं होतं. त्यात एका पिल्लाचं नव्यानेच आगमन झालं होतं. ते पिल्लू आता हळूहळू उडण्याचा प्रयत्न करत होतं. आणि अचानक माझ्या टेबलावर तेच पिल्लू पंख्यात अडकून पडलं आणि तडफडू लागलं. माझ्याकडे असलेल्या पाण्याच्या बाटलीतील पाणी मी त्या पिल्लाला पाजले. त्याच्या पायातून रक्त येत होतं. मी त्यावर औषधोपचार केले आणि रक्त थांबविण्याचा प्रयत्न केला. अर्थात ते घाबरल्यामुळे थरथरत होतं. मी त्याला छातीजवळ धरलं. बाहेरुन चिमणा-चिमणी जोरजोरात ओरडत होते. आता ते पिल्लू स्थिरावलं होतं. नशीब इतकच की पंख्याला ते निसटतं लागल्यामुळे एवढ्यावरच निभावलं होतं. माझ्या मनातील त्याच्या मरणाची भिती आता दूर झाली होती. परंतु पून्हा एक काळजी वाटू लागे की आता याला हे पक्षी आपल्यात सामावून घेतील की नाही ? कारण मी असं ऐकून होतो की माणसाचा स्पर्श जर पक्षाला झाला तर इतर पक्षी त्याला आपल्या समूहात तर घेत नाहीतच पण उलट त्याला टोचून टोचून मारतात. मी त्या विचारात असल्याने आज माझं ऑफिसच्या कामात धड लक्ष लागत नव्हतं. मी कृत्रिमपणे काम करत होतो. दुपारी माझ्या डब्यातील भाताचे काही शितकण मी त्या पिल्लाच्या चोचीत देण्याचा प्रयत्न केला आणि त्याला पुन्हा एकदा पाणी पाजले. आता मात्र एका ठिकाणाहून दुसरीकडे खुरडत खुरडत चालण्याचा प्रयत्न करु लागले होते. घाबरल्यामुळे त्याच्या पंखातील ताकद गेली होती. पण हळू हळू ते पंख हलवण्याचा प्रयत्न करत होते. आणि आश्चर्य म्हणजे संध्याकाळी ते हळूहळू उडत दाराच्या बाहेरील झुडूपावर जाऊन बसलं. मला खूपच आनंद झाला. आता फक्त मी पहात होतो की ती चिमणा-चिमणी काय करतात ते ! आणि काही वेळाने पाहीलं तर ते पिल्लू झूडुपातून गायबच झालं होतं. मी पुन्हा काळजीत. आणि माझं लक्ष त्या घरट्याकडे गेलं, पहातो तर काय त्या घरट्यात चिमणा-चिमणी आणि त्याचं पिल्लू शांतपणे बसली होती. मी त्या घरट्याकडे जवळ जाऊनही ती तिघही तिथेच शांत बसली होती. माझ्या आनंदाला पारावारच राहिला नाही. खरच त्यावेळी मला एवढं समाधान झालं की मी त्याचं वर्णनही करु शकत नाही. त्यानंतर मात्र काही दिवसाने अचानक त्या घरट्यातील ती तिघही निघून गेली. जातानाची त्यांची भरारी जरी मी पाहिली नसली तरी मला खरचं खूप समाधान वाटलं होतं आणि ते रीतं घरटं पाहून मन विषण्ण झालं होतं. कारण काही दिवसांचं का होईना माझं - त्यांचं एक नातं जडलं होतं. आज जरी या घटनेला अनेक वर्ष झाली असली तरी त्या घटनेतील सुखदु:खाचे क्षण आणि ती तिघं यांना मी कधीच विसरु शकत नाही. नात्यामध्ये जर भावनांचा ओलावा असेल तर ते नातं कधीच तूटत नाही.

आपल्या आयुष्यात पैसा अडका, संपत्ती, ऐश्वर्य, भौतिक सुखं या पेक्षाही सगळ्यात महत्वाचं म्हणजे एकमेकांना जपणं, एकमेकांना जाणून घेणं.

घार हिंडते आकाशी, चित्त तिचे पिल्लांपाशी ।

कितीही मैल दूर आकाशात जरी घार फिरत असली तरी तिचं चित्त तिच्या पिल्लांकडेच असतं. त्यात स्वार्थ नसतो तर त्यात असतो मायेचा हुंकार, मायेचा विलक्षण ओघ. असा ओघ, असा हुंकार सर्वांनी-सर्वांशी दाखवला तर या जगात मायेची, ममतेची, प्रेमाची, जिव्हाळ्याची गंगाच जणू प्रगट होईल.

नाते तुझे नी माझे
नाते युगायुगांचे
नाते बालपणीचे
नाते तरुणाईचे
नाते वृद्धत्वाचे
वृद्धत्वाच्या आधाराचे
नाते तुझे नी माझे
नाते हिंदोळ्याचे
नाते पशूपक्षांचे
नाते सुख दु:खाचे
नाते कोरीव लेणे
नाते तुझे नी माझे
नाते स्वातंत्र्याचे
नाते रणांगणाचे
नाते भूमातेचे
नाते पतिव्रतेचे
नाते तुझे ती माझे
नाते पावित्र्याचे
नाते चारित्र्याचे
नाते फुलण्याचे
फुलातील बहरण्याचे
नाते तुझे नी माझे !

जीवनलेखा

सौ. मनिषा पाटील

महालेख हे मानवजीवन, प्रभू तयांचे करी संपादन
अनेक असती विरामचिन्हे,
ठायी ठायी या लेखातून ।।धृ ।।

रम्यकाळ तो बालपणीचा, सुखद आरंभ जीवनाचा
नव नव ते मना भावते, जे दिसते ते हवे वाटते
चंचलमन स्वच्छंद बागडे,
'**स्वल्पविराम**' पट्टा चहुकडे ।।१ ।।

मार्गामध्ये ज्ञानपिपासा, देव-विश्व यास्तव जिज्ञासा
परंपरा रुढींचे कुतुहल, प्रगत विज्ञानाच्या खुणावती दिशा
याविषयी मनी विविध प्रश्न ते,
दिसे मज तिथे '**प्रश्नचिन्ह**' ते ।।२ ।।

यौवनात मग होई पदार्पण, सुखस्वप्नांचे रंगी जीवन
यश, किर्ती, संपदा, सुबत्ता अन् अर्धांगी जीवनी येता
अर्धे जीवन सफल वाटते,
'**अर्धविराम**' करु वाटे तिथे ।।३ ।।

प्रौढपणी ये परिपूर्णता, व्यापक बुद्धी अन् प्रभल्भता
भले काय अन् बुरे कोणते, विचारक्षमता मनात येते,
कृतकार्याचे मनन चिंतन,
होई मग '**उद्गारवाची**' मन ।।४ ।।

चाहुल वार्धक्याची लागता, महालेखाची भासे सांगता
धन, कांचन, किर्ती अन् कांता, देऊ न शकती मना शांतता
सुखशांतीचा तो अनंत ठेवा,
'**पूर्णविराम**' त्या प्रभूपदी द्यावा ।।५ ।।

सौ. मनिषा पाटील
प्रणाली विश्लेषक
सूचना प्रौद्योगिकी, कोंकण रेल्वे,
रत्नागिरी

मी म्हणालो ईश्वराला...

मी म्हणालो ईश्वराला सांग तू दिसशील का ?
मी जिथे जाईन तेथे सांग तू असशील का ?
तू चरा-चरात असशी, तू घरा-घरात असशी,
तू कळ्या-फुलात असशी, कोकिळेच्या गळ्यात असशी.
मंदिरातील प्रार्थनेच्या वा मशिदीतील नमाजी
ते तुला पाहतील तेव्हा तू तया दिसशील का ?
मी जिथे जाईन तेथे सांग तू असशील का ?

प्रकाश सावंत
बीएसएनएल, रत्नागिरी

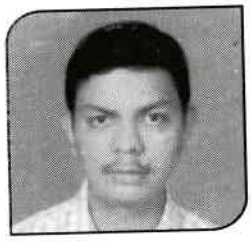

विशेष क्षमता असलेला चित्रकार : अनिकेत चिपळूणकर

एक मुलाकात
प्रस्तुति
श्री. जनार्दन शिंदे

अनिकेत हा श्री. सुरेश चिपळूणकर यांचा मोठा मुलगा. महाडला असतांना जिल्हा परिषदेच्या शाळेत अभ्यासात तो नेहमी मागेच असे. मात्र चित्र काढायला त्याला मनापासून आवडत असे. 2005 च्या जून महिन्यात त्यांची बदली रत्नागिरीला झाली आणि मग अनिकेतची बौद्धिक क्षमता कमी असल्याने त्याच्यासाठी अविष्कार संस्थेच्या सविता कामत विद्यामंदिर या शाळेत प्रवेश घेण्यात आला. तेथे शिकत असतांना वयाच्या १३ व्या वर्षापासून त्याच्यातील चित्रकला कौशल्याची जाणीव त्याला मार्गदर्शन करणाऱ्या त्याच्या शिक्षिका व मुख्याध्यापिका शमिन शेरे यांच्या लक्षात आली.

2005 ते 2007 या काळात त्याने चित्रकला आणि रंगकला यात खूप मेहनत घेतली. शाळेतील कलाशिक्षक श्री. बाबासाहेब कांबळे यांनी त्याची चित्रकलेतील मुलभूत कौशल्ये वाढविण्यासाठी प्रयत्न केले आणि त्याच्या कलाविष्कारामध्ये अधिक सफाई येऊ लागली. तो पेन्सिलीच्या सहाय्याने चांगली चित्रे काढू लागला. तेल खडू, रंगीत पेन्सिली आणि ब्रश यांच्या सहाय्याने तो बारीक आकारातही चांगला रंग भरु लागला. या त्याच्या कौशल्याबरोबरच त्याची चित्रकलेची आवड वृद्धिंगत होण्यासाठी शमिन शेरे यांनी त्याला विविध चित्रकला शैलींची ओळख करुन दिली आणि वारली आणि मधुबनी या अभिजात चित्रकला शैलींमध्ये चित्रकला विकसित होण्यासाठी विशेष प्रयत्न केले. 2007 मध्ये अनिकेतने बुकमार्कवर मधुबनी शैलीतील मोराच्या चित्रावर केलेले बारीक रंगकाम पाहून सर्वजण थक्क झाले. या बुकमार्कना आजही उत्तम प्रतिसाद मिळत आहे. वारली चित्रकलेतील मुलभूत आकारांचा अभ्यास 2008 पासून अनिकेतने सुरु केला. त्याचा अभ्यास करतांना त्याला शाळेतून विविध वारली चित्रे अभ्यासायला मिळाली. त्यांचे जीवन, त्यांचे नृत्यप्रकार, विविध दैनंदिन कामांची चित्रणे, त्यांचे वाद्य तारपा अशा विविध चित्रांचा तो बारकाईने अभ्यास करत असे आणि आपल्या चित्रकलेतून त्याची मांडणी करत असे. सरावाने त्याची या चित्रकलेत झालेली प्रगती पाहून सर्वजण चकित होत असत. वनवासी कल्याण आश्रमाचे रत्नागिरी येथील कार्यकर्ते श्री. विद्याधर मुळ्ये व सौ. शुभांगी मुळ्ये यांनी वारली जमातीतील एक चित्रकार हरेश्वर वनगा [illegible]वे एक प्रशिक्षण शिबीर रत्नागिरीमध्ये 2011 मध्ये आयोजित केले होते. या प्रशिक्षणाचा अनिकेतच्या वारली चित्रकलेतील प्रगतीसाठी फार चांगला उपयोग झाला.

डिसेंबर 2011 मध्ये अविष्कार संस्थेच्या रौप्यमहोत्सवानिमित्त कलाजत्रा नावाचे एक कलाप्रदर्शन आयोजित करण्यात आले होते. या प्रदर्शनामध्ये अनिकेतने वारली चित्रे काढलेल्या कागदी पिशव्या, कापडी पिशव्या, पर्स इ. अनेक वस्तू ठेवल्या होत्या. प्रदर्शनाला भेट देणाऱ्या रत्नागिरीतील सर्व मान्यवरांनी त्याची प्रशंसा केली. ऑक्टोबर 2012 मध्ये अनिकेतने ॲबिलिम्पिक्स या अपंगत्व असलेल्या मुलांसाठीच्या पुणे येथे झालेल्या राज्यस्तरीय चित्रकला स्पर्धेमध्ये भाग घेतला होता. मतिमंदत्व असलेल्या मुलांच्या गटामध्ये अनिकेत हा एकच स्पर्धक अस[illegible]ने आयोजकांनी त्याचा समावेश कर्ण-बधीरत्व असलेल्या मुलांच्या गटामध्ये केला. वास्तविक बौद्धिक दृष्ट्या या गटातील मुले अनिकेतपेक्षा कितीतरी अधिक सक्षम होती. परंतु प्रत्यक्ष स्पर्धेच्या जागी कलाविष्कार करण्याच्या या स्पर्धेमध्ये अनिकेतने द्वितीय क्रमांक पटकावला. नोव्हेंबर 2013 मध्ये अहमदाबाद येथे झालेल्या विभागीय स्तरावरील ॲबिलिम्पिक्स मध्ये तो सहभागी झाला होता.

ऑक्टोबर 2012 पासून अनिकेत डॉ. शाश्वत शेरे यांच्या संतुलन क्रिएटिव्ह वर्कशॉप या पुनर्वसन उपक्रमामध्ये स्वतंत्रपणे आपली कलानिर्मिती करीत आहे. या उपक्रमासोबत क्रिएटिव्ह इन्स्पिरेशन आणि क्वॉलिटी सर्विस यांनी एकत्रित सुरु केलेल्या न्यारी नगर या प्रदर्शनाच्या

उद्घाटन प्रसंगी प्रसिद्ध चित्रकार श्री. गोपी कुकडे यांचे हस्ते अनिकेतचा सत्कार करण्यात आला. ऑगस्ट 2013 मध्ये त्याच्या वारली चित्रकलेचे पहिलेच जाहीर प्रदर्शन रत्नागिरीतील रंगधानी आर्ट गॅलरी येथे भरविण्यात आले होते. या प्रदर्शनाला अनेक मान्यवर रसिकांनी भेट दिली. यामध्ये श्री. नंदकुमार तेलंग, क्षेत्रीय रेल प्रबंधक, कोकण रेल्वे, रत्नागिरी यांचाही समावेश होता. भविष्यात अनिकेतची कला भारतातील मोठ्या शहरातच नाही तर परदेशापर्यंत पोहोचावी अशा शुभेच्छा त्यांनी दिल्या.

दि. 28 सप्टेंबर 2013 रोजी वनवासी कल्याण आश्रमाच्या रत्नागिरी जिल्हा मेळाव्यामध्ये वारली कलाविष्कारातील कार्याबद्दल अनिकेतचा मा.श्री. बाळासाहेब माने यांचे हस्ते सत्कार करण्यात आला. याच दिवशी क्वॉलिटी सर्विसतर्फे त्याचे चित्र लग्नपत्रिकेवर छपाई करण्यासाठी निवडले गेले. दि. 14 ऑक्टोबर 2013 रोजी कोकण रेल्वे कॉर्पोरेशन च्या सौजन्याने त्याच्या चित्राचे प्रदर्शन रत्नागिरी रेल्वे स्थानकावर सर्व रसिक नागरिकांसाठी भरविण्यात आले होते. याप्रसंगी श्री. भानू तोयल, प्रबंधक, कोंकण रेल्वे यांनी अनिकेतची चित्रे पाहून त्याचे कौतुक केले व त्याच्या कलेला प्रोत्साहन देण्यासाठी प्रयत्न करण्याचे आश्वासन दिले. दि. 3 डिसेंबर 2013 च्या अपंग दिनापासून अनिकेतला त्याची चित्रकला कोंकण रेल्वेच्या रत्नागिरी स्थानकावरील 2 क्रमांकाच्या प्लॅटफॉर्मच्या भिंतीवर साकार करण्यासाठी आमंत्रित करण्यात आले.

इतक्या मोठ्या प्रमाणात चित्रे काढण्याची त्याची ही पहिलीच वेळ होती. शिवाय आजूबाजूच्या प्रवाशांची गडबड, रेल्वेचे येणे जाणे या सर्वांच्या अडथळ्यांना बाजूला ठेऊन चित्रावर लक्ष एकाग्र करणे ही सुद्धा कठीण गोष्ट होती. परंतु आपल्या चिकाटीने आणि परिश्रमाने अनिकेतने हे काम पुढील काही महिन्यात पूर्ण केले. तेव्हापासून सदर चित्रकाम सर्व प्रवाशांच्या कौतुकाचा विषय ठरले आहे.

***

* हिंदी पढ़ना और पढ़ाना हमारा कर्तव्य है,
उसे हम सबको अपनाना है ।

- लाल बहादुर शास्त्री

* हिंदी में अखिल भारतीय भाषा
बनने की क्षमता है ।

- राजा राममोहन राय

* हिंदी हमारे राष्ट्र की
अभिव्यक्ति का स्त्रोत है ।

- सुमित्रानंदन पंत

* चूंकि भारतीय एक होकर एक समन्वित
संस्कृति का विकास करना चाहते है,
इसलिए सभी भारतीयों
का यह परम कर्तव्य हो जाता है कि वे
हिंदी को अपनी भाषा समझकर अपनाएं ।

- डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर

बैंक ग्राहक - सावधानियां

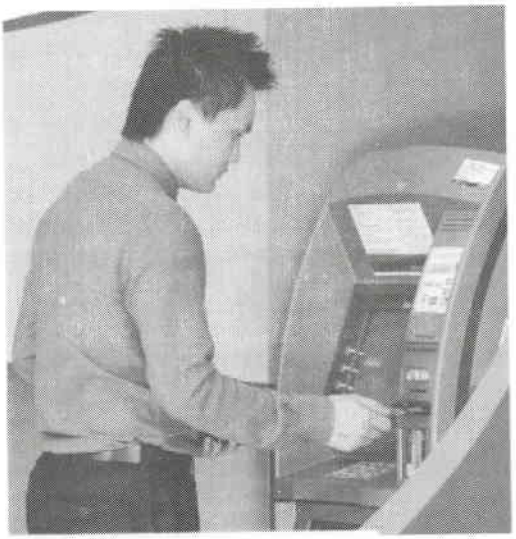

हाल ही में बैंकों द्वारा यह सूचित किया जा रहा है कि कोई अनजान व्यक्ति फोन पर बैंक अधिकारी के रुप में बात करके उनके एटीएम कार्ड, एटीएम पिन, क्रेडिट कार्ड, इंटरनेट बैंकिंग युजर आई.डी., पासवर्ड की निजी एवं गुप्त जानकारी हासिल कर रहा है, और जैसे ही यह जानकारी प्राप्त होते ही कुछ मिनिटों में ग्राहकों के खाते से भारी रक्कम, राशी एटीएम द्वारा या इंटरनेट द्वारा आहरित की जाती है और ग्राहक के खाते से सारी रकम निकाली जाती है ।

कोई भी बैंक अपने ग्राहक से इस प्रकार की निजी एवं गुप्त जानकारी नहीं पूछती । अत: ग्राहकों ने सतर्क रहना आवश्यक है कि, कभी भी किसी अनजान व्यक्ति को अपने एटीएम कार्ड, एटीएम पिन, क्रेडिट कार्ड, इंटरनेट बैंकींग युजर आईडी, पासवर्ड आदि की निजी एवं गुप्त जानकारी फोन पर, या ई-मेल पर या प्रत्यक्ष में न दें और उसे गुप्त ही रखें, कुछ अंतराल से अपना पिन या पासवर्ड बदलते रहना जरुरी है । आज बैंकों द्वारा एस.एम.एस. द्वारा एटीएम, इंटरनेट बैंकिंग द्वारा किये गये आर्थिक व्यवहारों की सूचना तुरंत ग्राहकों को दी जाती है, जिससे ग्राहकों को धोखाधडी के व्यवहारों का तुरंत पता चल सकता है ।

अगर ऐसी दुरुपयोग या धोखाधडी की कोई घटना हो, तो तुरंत अपने नजदीकी बैंक शाखा में इसकी सूचना देकर अपने खाते से सारी रकम निकाल लें या अपना खाता ' करें ताकि आपके खाते की राशि सुरक्षित रहे । इसकी सूचना पुलिस को भी तुरंत दी जानी चाहिए ताकि जिस नम्बर से फोन आया हो उसके जरिये पुलिस को छान-बीन करके गुनहगारों को पकडने में मदद मिले ।

इस प्रकार के गुनाहों को सायबर क्राईम के जगत में 'फिशिंग' या 'व्हिशिंग' के नाम से जाना जाता है । इस प्रकार की घटनाओं को रोकने के लिये सभी बैंकों द्वारा ग्राहकों को सतर्क रहने का अनुरोध करते हुए, शाखा परिसर और एटीएम के अंदर भी ऐसी सूचना को प्रदर्शित किया जाना चाहिए जिसके द्वारा ग्राहक सतर्क रह सकते है ।

नगर राजभाषा समिति के तत्वाधान में विविध प्रतियोगिता का आयोजन

नगर राजभाषा शील्ड प्रतियोगिता

प्रथम क्रमांक : कोंकण रेल्वे
द्वितीय क्रमांक : इंडियन ओवरसीज बैंक
तृतीय क्रमांक : आकाशवाणी

प्रोत्साहन :- 1) भारत संचार निगम
2) बैंक ऑफ़ बड़ोदा

हिन्दी सुलेखन प्रतियोगिता : आयोजक, बैंक ऑफ़ इंडिया आं.का.रत्नागिरी

प्रथम क्रमांक : श्री. एस. एस. राजने – दूरदर्शन केंद्र, सहाय्यक अभियंता
द्वितीय क्रमांक : श्री. नंदु म. तेलंग – कोंकण रेल्वे, क्षेत्रीय रेल प्रबंधक
तृतीय क्रमांक : श्री. विनय परांजपे – दि ओरिएंटल इन्शोरन्स लिमिटेड, शाखा प्रबंधक
उत्तेजनार्थ : 1) श्री. सुहास कांबळे – भारत संचार निगम लिमिटेड, महाप्रबंधक
2) श्री. रमेश रामचंद्र खाडे – विदर्भ कोकण क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक, रत्नागिरी, क्षेत्रीय प्रबंधक
3) श्रीमती उषा हटवार – इंडियन ओवरसीज बैंक, शाखा अधिकारी

हिन्दी निबंध प्रतियोगिता : आयोजक, न्यू इंडिया एश्योरन्स कं.,रत्नागिरी

प्रथम क्रमांक : श्रीमती मनीषा अ. पाटील – प्र.वि.सूचना प्रौद्योगिकी, कोंकण रेल्वे, रत्नागिरी
द्वितीय क्रमांक : श्री. अब्दुल अजीज वझीर नाकाडे – वरिष्ठ तकनीशियन, आकाशवाणी, रत्नागिरी
तृतीय क्रमांक : श्रीमती इच्छा विजय आनेराव – प्रशासनिक अधिकारी, दि न्यू इंडिया अॅश्यु.कं.लि., रत्नागिरी
उत्तेजनार्थ : 1) श्री. पंकज कुमार सिंघल – अधिकारी, बैंक ऑफ़ इंडिया, रत्नागिरी
2) श्री. किरण रा. डोंगरे – वरिष्ठ कार्यालय सहाय्यक, बी.एस.एन.एल. कार्यालय, रत्नागिरी
3) श्रीमती वृषाली पेठे – बैंक ऑफ़ इंडिया, रत्नागिरी

हिन्दी शब्द अनुसंधान - आयोजक भारत संचार निगम लि., रत्नागिरी

प्रथम क्रमांक : 1) श्रीमती स्वरुपा साळवी – भारत संचार निगम लि. 2) श्री. दिलीप पाठक – भारत संचार निगम लि.
द्वितीय क्रमांक : श्री. पुंडलिक पाटील – भारत संचार निगम लि.
तृतीय क्रमांक : श्रीमती विशाखा जाधव – न्यू इंडिया एश्युरन्स कंपनी
प्रोत्साहन : 1) श्री. तुकाराम काशिद – भारत संचार निगम लि. 2) श्रीमती इच्छा आनेराव – न्यू इंडिया एश्युरन्स कंपनी

हिन्दी शब्दावली - आयोजक बैंक ऑफ महाराष्ट्र, आं.का., रत्नागिरी

प्रथम क्रमांक : सुश्री. श्वेता कुमारी, बैंक ऑफ़ महाराष्ट्र
द्वितीय क्रमांक : श्री. रामदयाल मिना, सीमा शुल्क कार्यालय.
तृतीय क्रमांक : श्री. कुंदन प्रताप, सीमा शुल्क कार्यालय.
प्रोत्साहन : 1) श्री. ए. जी. हुलेश्वर, भारत संचार निगम लि., 2) श्री. अमित कुमार गौतम, केंद्रीय उत्पाद शुल्क

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, रत्नागिरी - सदस्य कार्यालय

क्र.	सदस्य कार्यालय का नाम	
1	बैंक ऑफ इंडिया, आंचलिक कार्यालय	222615 / 16
2	विदर्भ कोकण ग्रामीण बैंक, क्षेत्रीय कार्यालय	222066
3	सिंडिकेट बैंक	222317
4	बैंक ऑफ महाराष्ट्र	222895
5	सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया	227532 / 528
6	भारतीय स्टेट बैंक, क्षेत्रीय कार्यालय	234801
7	युनियन बैंक ऑफ इंडिया	223239
8	ओरिएंटल बैंक ऑफ कॉमर्स	223970 / 227573
9	कॉरपोरेशन बैंक	271811
10	बैंक ऑफ बडोदा	222539 / 221631
11	केनरा बैंक	270831
12	विजया बैंक	225625
13	देना बैंक	222691
14	आंध्रा बैंक	271629
15	इंडियन ओवरसीज बैंक	271667
16	इंडियन बैंक	270505
17	भारतीय जीवन बीमा निगम	222496
18	दि न्यु इंडिया एश्योरन्स कं.	223396
19	नैशनल एश्योरन्स कं.	223518
20	युनायटेड एश्योरन्स कं.	222566
21	ओरिएंटल एश्योरन्स कं.	222715
22	भारतीय डाक विभाग	220055
23	भारतीय संचार निगम	234200 / 270700
24	दूरदर्शन केंद्र	223016
25	आकाशवाणी केंद्र	222767
26	कोकण रेल्वे	228942
27	केंद्रीय उत्पाद शुल्क	226654
28	आयकर कार्यालय	271518
29	सीमा शुल्क मंडल	222869
30	युको बैंक	227455
31	भारतीय खाद्य निगम लि.	228830
32	न्युक्लियर पावर कार्पोरेशन लि.	203248
33	इलाहाबाद बैंक	229540
34	तटरक्षक दल, रत्नागिरी	224555
35	पंजाब नैशनल बैंक	271920
36	समुद्री उत्पाद निर्यात विकास प्रशिक्षण	220891

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की पिछली बैठक के कुछ क्षण...

रत्नसिंधु चतुर्थअंक का विमोचन

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की पिछली बैठक के कुछ क्षण...

स्वागत

श्री.सुहास कांबळे
महाप्रबंधक
बी.एस.एन.एल.रत्नागिरी.

श्री.विजय प्रकाश श्रीवास्तव
आंचलिक प्रबंधक
बैंक ऑफ़ महाराष्ट्र, रत्नागिरी.

श्री.बी.बी.निकम
क्षेत्रीय रेल प्रबंधक
कोंकण रेल्वे, रत्नागिरी.

श्री. देवधर
वरिष्ठ प्रबंधक
एल.आई.सी,रत्नागिरी.

श्री. शिव किरण येलूरी
शाखा प्रबंधक
इलाहाबाद बैंक, रत्नागिरी.

श्री.अशोक कुमार ओझा
शाखा प्रबंधक
पंजाब नैशनल बैंक,रत्नागिरी.

श्री.राजपाल
भारतीय तटरक्षक अवस्थान, रत्नागिरी.
(रक्षा मंत्रालय, भारत सरकार.)

सुश्री यशश्री मोरे
वरिष्ठ प्रबंधक
सेन्ट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया,रत्नागिरी.

श्री.डॉ. विष्णुदास आर.गुनगा
समुद्री उत्पाद निर्यात विकास प्रधिकारण,रत्नागिरी.
(वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय, भारत सरकार.)

राजभाषा रत्नसिंधु

बुक-पोस्ट
Book-Post

प्रति,

प्रेषक
अध्यक्ष,
नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति,रत्नागिरी.
बैंक ऑफ. इंडिया
आंचलिक कार्यालय,शिवाजीनगर,रत्नागिरी,महाराष्ट्र - 415 639